INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

ग्राम विकास अधिकारी (VDO)

(मुख्य परीक्षा हेतु)

राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग (RSSB)

भाग – 1

सामान्य हिंदी + अंग्रेजी

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान ग्राम विकास अधिकारी (मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान ग्राम विकास अधिकारी (मुख्य परीक्षा)"** में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online Order करें - https://shorturl.at/qClJS

WhatsApp करें - https://wa.link/9h4q2x

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

	हिंदी	
क्र.सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	संधि एवं संधि विच्छेद	1
2.	समास एवं समास – विग्रह	12
3.	उपसर्ग	26
4.	प्रत्यय	30
5.	संज्ञा	38
6.	सर्वनाम	43
7.	विशेषण	44
8.	क्रिया	47
9.	पर्यायवाची शब्द	49
10.	विलोम शब्द	61
11.	शब्द युग्म भिन्नार्थक शब्द	74
12.	वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द	83
13.	समश्रुत भिन्नार्थक शब्द / अनेकार्थी शब्द	96
14.	शब्द शुद्धि	97
15.	वाक्य-शुद्धि	102
16.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ	108
17.	पारिभाषिक : प्रशासनिक शब्दावली	121

	English	
1.	Article	133
2.	Noun	146
3.	Pronoun	156
4.	Adjective	165
5.	The Verb	173
6.	Adverb	179
7.	Time And Tense	186
8.	Active / Passive Voice of Verb	197
9.	Conversion into Direct & Indirect Narration	204
10.	Preposition	209
11.	Antonyms / synonyms	223
12.	Comprehension Passage	235
13.	Idioms & phrases	247
14.	One Word Substitution	252

हिंदी

अध्याय – 1

संधि एवं संधि विच्छेद

संधि

परिभाषा :- दो वर्णों के परस्पर मेल से उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहते हैं अर्थात् प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन करते हैं। उसे संधि कहते हैं।

संधि – 1.आदेश :- किसी वर्ण के स्थान पर कोई दुसरा वर्ण आ जाये तो ,

जगत्+ईश = जगदीश

वाक्+ईश = वागीश

2. आगम – अनु+छेद = अनुच्छेद
च्

3. लोप – अतः+एव = अतएव

4. प्रकृतिभाव - मनः+कामना = मनःकामना

संयोग – प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे शब्द का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में कोई परिवर्तन नहीं कर पाए तो उसे संयोग कहते हैं।

उदाहरण : - युग + बोध = युगबोध

संधि के भेद – संधि के तीन भेद होते हैं

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

स्वर संधि – दो स्वरों के परस्पर मेल को संधि कहते हैं।

स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है :-

1. दीर्घ स्वर संधि
2. गुण स्वर संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण् स्वर संधि
5. अयादि स्वर संधि

हिंदी में अ, आ, इ, ई , उ , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ , ऋ , कुल 11 स्वर होते हैं।

1. **दीर्घ स्वर संधि** - यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर (अ , इ , उ) के बाद समान ह्रस्व (अ , इ , उ) या दीर्घ स्वर आये तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।

उदा. अ/आ + अ/आ = आ

इ/ई + इ/ई = ई

उ/ऊ + उ /ऊ = ऊ

(1) अ +अ =आ

अंत्य + अक्षरी = अंत्याक्षरी

अंध + अनुगामी = अंधानुगामी

अधिक + अंश = अधिकांश

अधिक + अधिक = अधिकाधिक

अस्त + अचल = अस्ताचल

आग्नेय + अस्त्र = आग्नेयास्त्र

उत्तर + अधिकार = उत्तराधिकार

उदय + अचल = उदयाचल

उप + अध्याय = उपाध्याय

उर्ध्व + अधर = उर्ध्वधर

ऊह + अपोह = ऊहापोह

काम + अयनी = कामायनी

गत + अनुगतिक = गतानुगतिक

गीत + अंजलि = गीतांजलि

छिद्र + अन्वेषी = छिद्रान्वेषी

जठर + अग्नि = जठराग्नि

जन + अर्दन = जनार्दन

तथ्य + अन्वेषण= तथ्यान्वेष्ण

तीर्थ + अटन = तीर्थाटन

दाव + अनल = दावानल

दीप + अवली = दीपावली

दाव + अग्नि = दावाग्नि

देश + अंतर = देशांतर

न्यून + अधिक = न्यूनाधिक

पद + अवनत = पदावनत

पर + अधीन = पराधीन

प्र + अंगन = प्रांगण

प्र + अर्थी = प्रार्थी

भग्न + अवशेष = भग्नावशेष

अ + आ = आ

आम + आशय = आमाशय

गर्भ + आधान = गर्भाधान

अन्य + आश्रित = अन्याश्रित

गर्भ + आशय = गर्भाशय

आर्य + आवर्त = आर्यावर्त

फल + आहार = फलाहार

कंटक + आकीर्ण = कंटकाकीर्ण

छात्र + आवास = छात्रावास

कुश + आसन = कुशासन

जन + आकीर्ण = जनाकीर्ण

खग + आश्रय = खगाश्रय

जना + देश = जनादेश

गमन + आगमन = गमनागमन

भय + आक्रान्त = भयाक्रांत

भय + आनक = भयानक

पित्त + आशय = पित्ताशय

धर्म + आत्मा = धर्मात्मा

भ्रष्ट + आचार = भ्रष्टाचार

मेघ + आलय = मेघालय

लोक + आयुक्त = लोकायुक्त

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

विरह + आतुर = विरहातुर
विवाद + आस्पद = विवादास्पद
शत + आयु = शतायु
शाक + आहारी = शाकाहारी
शोक + आतुर = शोकातुर
सत्य + आग्रह = सत्याग्रह
सिंह + आसन = सिंहासन
स्थान + आपन्न = स्थानापन्न
हिम + आलय = हिमालय
जल + आशय = जलाशय
पंच + आयत = पंचायत

आ + अ = आ

क्रिया + अन्वयन = क्रियान्वयन
मुक्ता + अवली = मुक्तावली
तथा + अपि = तथापि
रचना + अवली = रचनावली
दीक्षा + अंत = दीक्षांत
विद्या + अर्जन = विद्यार्जन
द्राक्षा + अरिष्ट = द्राक्षारिष्ट
श्रद्धा + अंजलि = श्रद्धांजलि
द्राक्षा + अवलेह = द्रक्षावलेह
सुधा + अंशु = सुधांशु
निशा + अंत = निशांत
द्वारका + अधीश = द्वारकाधीश
पुरा + अवशेष = पुरावशेष
महा + अमात्य = महामात्य

आ + आ = आ

कारा + आगार = कारागार
कारा + आवास = कारावास
कृपा + आकांशी = कृपाकांशी
क्रिया + आत्मक = क्रियात्मक
चिंता + आतुर = चिंतातुर
दया + आनंद = दयानंद
द्राक्षा + आसव = द्राक्षासव
निशा + आनन = निशानन
प्रेक्षा + आगार = प्रेक्षागार
प्रेरणा + आस्पद = प्रेरणास्पद
भाषा + आबद्ध = भाषाबद्ध
महा + आशय = महाशय
रचना + आत्मक = रचनात्मक
वार्ता + आलाप = वार्तालाप
श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु

(2). इ / ई + इ /ई = ई

इ + इ = ई

अति + इत = अतीत
अति + इन्द्रिय = अतीन्द्रिय
अति + इव = अतीव
अधि + इन = अधीन
अभि + इष्ट =अभीष्ट
कवि + इंद्र = कविन्द्र
प्रति + इत = प्रतीत
प्राप्ति + इच्छा = प्राप्तीच्छा
मणि + इंद्र = मणीन्द्र
मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र
रवि + इंद्र = रवीन्द्र
हरि + इच्छा = हरीच्छा

ई + इ = ई

फणी + इंद्र = फणीन्द्र
महती + इच्छा = महतीच्छा
मही + इंद्र = महींद्र
यती + इंद्र = यतीन्द्र
शची + इंद्र = सुधींद्र

ई + ई =ई

नदी + ईश्वर = नदीश्वर
नारी + ईश्वर = नारीश्वर
फणी + ईश्वर = फणीश्वर
मही + ईश = महीश
रजनी + ईश = रजनीश
श्री + ईश = श्रीश
सती + ईश = सतीश

इ + ई = ई

अधि + ईक्षक = अधीक्षक
अधि + ईक्षण = अधीक्षण
अधि + ईश्वर = अधीश्वर
अभि + ईप्सा = अभीप्सा
कपि + ईश = कपीश
क्षिति + ईश = क्षितीश
गिरी + ईश = गिरीश
परि + ईक्षित = परीक्षित
परि + ईक्षा = परीक्षा
प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
प्रति + ईक्षित =प्रतीक्षित
मुनि + ईश्वर = मुनीश्वर
वारि + ईश = वारीश
वि + ईक्षक = वीक्षक
हरि + ईश = हरीश

दीर्घ संधि के अपवाद –

शक + अन्धु = शकंधु
कर्क + आन्धु = कर्कन्धु
पितृ + ऋण = पितृण
मातृ + ऋण = मातृण

(2).गुण स्वर संधि : -

अ /आ + इ/ई =ए
अ /आ + उ / ऊ = ओ
अ / आ + ऋ = अर्

ऊ + आ = वा
वधू + आगमन = वध्वागमन

ऋ + असमान स्वर = र् + अन्य स्वर
ऋ+ अ = र
पितृ + अनुमति = पित्रनुमति

ऋ + आ = रा
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा
पितृ + आदेश = पित्रादेश
मातृ + आनंद = मात्रान्नद
मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

ऋ + इ = रि
पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा
मातृ + उपयोगी = मात्रुपयोगी

ऋ + ए = रे
पितृ + एषणा = पित्रेषणा
मातृ + एषणा = मात्रेषणा
पुत्र + एषणा = पुत्रेषणा

5. अयादि स्वर संधि :-
ए / ऐ = अय् / आय्
ओ / औ = अव् / आव्

नियम : - यदि ए , ऐ , ओ ,औ के बाद कोई भी स्वर आए तो 'ए' के स्थान पर 'अय्' तथा 'ऐ' के स्थान पर 'अय्' तथा ओ के स्थान पर 'अव्' व 'औ' के स्थान पर 'आव्' हो जाता है।

ए + असमान स्वर = आय् + अन्य स्वर
ए+ अ = अय
चे + अन = चयन
ने + अन = नयन
शे + अन = शयन
संचे + अ = संचय

ऐ + अ = आय
गैं + अक = गायक
गैं + अन = गायन
नैं + अक = नायक
नैं + इका = नायिका
दैं + इनी = दायिनी
दैं + अक = दायक
विनैं + अक = विनायक
शैं + अक = शायक

ओ + अ = आव
ओ + अ = अवि
ओ + इ = अवी
गो + अक्षि / अक्ष = गवाक्ष
गो + ईश = गवीश
गो + य = गव्य

पो + अन = पवन
भो + अन = भवन
हो + अन = हवन

औं + अ = आव
पौं + अन = पावन
भौं + अ = भाव
भौं + अक = भावक
भौं + अना = भावना
शौं + अक = शावक

औं + इ = आवि
शौं + अ = इक = शाविक

औं + उ = आवु
भौं + उक = भावुक

(2). व्यंजन संधि
व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने पर उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
नियम :- यदि किसी अघोष व्यंज (वर्ग का पहला व दूसरा वर्ण) के बाद कोई घोष व्यंजन (वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवा, वर्ण तथा य, र, ल, व, ह (अंत:स्थ वर्ण) या कोई स्वर आये तो वर्ग का पहला वर्ण , तीसरे वर्ण में बदल जाता है।

जैसे : -		
क्		ग्
च्		ज्
ट्	+ घोष वर्ण	ड्
त्		द्
प्		ब

षट् + आनन = षडानन
षट् + दर्शन = षड्यंत्र

उदाहरण :-
दिक् + अम्बर = दिगंबर
दिक् + अंत = दिगंत
दृक + अंचल = दृग्गचल
वाक् + ईश = वागीश
प्राक् + ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक
दिक् + गज = दिग्गज
दिक् + ज्ञान = दिग्ज्ञान
वाक् + जाल = वाग्जाल
वाक् + दत्ता = वाग्दत्ता
वाक् + दान = वाग्दान
चित् + रूप = चिद्रूप
सत् + रूप = सद्रूप
चित् + विलास = चिद्विलास
वाक् + देवी = वाग्देवी
सम्यक् + दर्शन = सम्यग्दर्शन
दिक् + बोध = दिग्बोध
दिक् + भ्रम = दिग्भ्रम
ऋक् + वेद = ऋग्वेद

दिक् + विजय = दिग्विजय
सम्यक् + वाणी = सम्यग्वाणी
दिक् + हस्ती = दिग्हस्ती
वाक् + हरि = वग्हरि
अच् + अंत = अजंत
विराट् + आकार = वीराडाकार
षट् + अंग = षडंग
अप् + ज = अब्ज
अप् + द = अब्द
अप् + धि = अब्धि
जगत् + अंबा = जगदंबा
चित् + अणु = चिदणु
चित् + आकार = चिदाकार
जगत् + आत्मा = जगदात्मा
वृहत् + आकार = वृहदाकर
सत् + आचार = सदाचार
सत् + आत्मा = सदात्मा
सत् + आनंद = सदानंद
सत् + आशय = सदाशय
सत् + इच्छा = सदिच्छा
जगत् + ईश = जगदीश
सत् + उपयोग = सदुपयोग
सत् + उपदेश = सदुपदेश
सत् + गति = सद्गति
जगत् + गुरु = जगद्गुरु
सत् + गुण = सद्गुण
पोत् + दार = पोद्दार
विद्युत् + धारा = विद्युद्धारा
सत् + धर्म = सद्धर्म

नियम : -(2) यदि वर्ग के प्रथम वर्ण (क् , च् , ट् , त् , प्) के बाद न् या म् आए तो प्रथम वर्ण अपने ही वर्ग के पाँचवें वर्ण में बदल जाता है |

उदाहरण –

क्
च्
ट् + न / म = पाँचवें वर्ण में परिवर्तन
त्
प्

दिक् + नाग = दिङ्नाग
दिक् + मंडल = दिङ्मंडल
वाक् + निपुण = वाङ्निपुण
दिक् + मुख = दिङ्मुख
दिक् + मूढ = दिङ्मूढ
षट् + मास = षण्मास
षट् + मातुर = षण्मातुर
जगत् + नाथ = जगन्नाथ
जगत् + निवास = जगन्निवास
भवत् + निष्ठ = भवन्निष्ठ

श्रीमत् + नारायण = श्रीमन्नारायण
चित् + मय = चिन्मय
जगत् + माता = जगन्माता
जगत् + मोहिनी = जगन्मोहिनी
सत् + मार्ग = सन्मार्ग
सत् + मति = सन्मति
सत् + मान = सन्मान
उद् + नत = उन्नत
उद् + निद्र = उन्निद्र
उद् + मूलन = उन्मूलन
उद् + मोचन = उन्मोचन
तद् + मय = तन्मय
मृद् + मय = मृण्मय
मृद् + मूर्ति = मृण्मूर्ति
मृद् + मयी = मृण्मयी

नियम : - (3) यदि ‘ म्’ के बाद स्पर्श वर्ण आए तो ‘म्’ को स्पर्श वर्ण के अंतिम वर्ण में बदल देते है यदि अन्तःस्थ , ऊष्म या संयुक्त वर्ण आए तो ‘म्’ को अनुस्वार में बदल देते है और यदि कोई स्वर आए तो दोनों को जोड़ देते हैं |

उदाहरण –

अलम् + कृति = अलङ्कृति (अलंकृति)
अलम् + करण = अलङ्करण (अलंकरण)
अलम् + कृत = अलङ्कृत (अलंकृत)
अहम् + कार = अहङ्कार (अहंकार)
भयम् + कर = भयंकर
शम् + कर = शंकर
शुभम् + कर = शुभंकर
सम् + क्षेप = संक्षेप
सम् + तोष = संतोष
सम् + तुष्ट = संतुष्ट
सम् + ताप = संताप
सम् + तति = संतति
सम् + कलन = संकलन
सम् + कल्प = संकल्प
अम् + जन = अंजन
चिरम् + जीवी = चिरंजीवी
धनम् + जय = धनंजय
सम् + क्रांति = सक्रांति
सम् + घटन = संघटन
सम् +गठन = संगठन
सम् + गत = संगत
मम् + जन = मंजन
मृत्यु + जय = मृत्युन्जय
सम् + जय = संजय
सम् + गति = संगति
सम् + गम = संगम
सम् + घनन = संघनन

सम् + घर्ष = संघर्ष
परम् + तप = परंतप
किम् + नर = किन्नर
सम् + निवेश = सन्निवेश
सम् + न्यासी = संन्यासी
सम् + निहित = सन्निहित
सम् + निकट = सन्निकट

नियम : - यदि 'म्' के पश्चात 'क्' से 'म्' तक के स्पर्श व्यंजन के अलावा ऊष्म व्यंजन (श्, ष् , स् , ह्) अथवा अंतस्थ व्यंजन (य् , र् , ल् , व्) आए तो 'म्' (अनुस्वार) में बदल जाता है ।

उदाहरण –
सम् + रचना = संरचना
सम् + लिप्त = संलिप्त
सम् + वरण = संवरण
सम् + वाहक = संवाहक
सम्म + श्लेषण = संश्लेषण
सम् + हति = संहति
सम् + हिता = संहिता
सम् + हार = संहार
सम् + रक्षक = संरक्षक
सम् + लग्न = संलग्न
सम् + लाप = संलाप
सम् + वर्धन = संवर्धन
सम् + वाद = संवाद
सम् + विधान = संविधान
सम् + शय = संशय
सम् + स्मरण = संस्मरण
स्वयम् + वर = स्वयंवर

नियम : - (5) यदि 'द्' के बाद क्, त्, थ् , प् , स् आये तो 'द्' वर्ण 'त्' वर्ण के रूप में बदल जाता है ।

उदाहरण –
आपद् + काल = आपत्काल
उद् + कट = उत्कट
उद् + कीर्ण = उत्कीर्ण
उद् + कोच = उत्कोच
उद् + क्षिप्ति = उत्क्षिप्त
उपनिषद् + कथा = उपनिषत्कथा
तद् + काल = तत्काल
उद् + सव = उत्सव
तद् + क्षण = तत्क्षण
विपद् + काल = विपत्काल
शरद् + काल = शरत्काल
उद् + तर = उत्तर
उद् + ताप = उत्ताप
उद् + तीर्ण = उत्तीर्ण
उद् + तेजक = उत्तेजक

संसद् + सत्र = संसत्सत्र
मृद् + टिका = मृत्तिका
विपद् + ति = विपत्ति
संपद् + ति = संपत्ति
उद् + पन्न = उत्पन्न
तद् + पर = तत्पर
तद् + परायण = तत्परायण
तद् + पुरुष = तत्पुरुष
उद् + सर्ग = उत्सर्ग
मृद् + पात्र = मृत्पात्र

नियम : - (6) यदि 'त्' / 'द्' के बाद च , छ ,ज , ल , ह , श आये वह अपने ही उच्चारण में बदल जाते है ।

यदि त् / द् + —
च → च्च
छ → च्छ
ज → ज्ज
ट → ट्ट
ल → ल्ल
ह → द्ध
ड → ड्ड
में बदल जाते है।

उदा. – त् / द् + च = च्च
उद् + चातन = उच्चातन
उद् + चारण = उच्चारण
तडित् + चालक = तडिच्चालक
विद्युत् + चालक = विद्युच्चालक
सत् + चरित्र = सच्चरित्र
सत् + चिदानंद = सच्चिदानंद
समुद् + चय = समुच्चय

त् / द् + छ = च्छ
उद् + छिन्न = उच्छिन्न
उद् + छादन = उच्छादन
उद् + छेद = उच्छेद
जगत् + छाया = जगच्छाया
अनु + छेद = अनुच्छेद

त् / द् + ज = ज्ज
उद् + ज्वल = उज्ज्वल
जगत् + जननी = जगज्जननी
तडित् + ज्योति = तड़िज्ज्योति
तद् + जनित = तज्जनित
तद् + जन्य = तज्जन्य
यावत् + जीवन = यावज्जीवन
विद्युत् + जाल = विद्युज्जाल
सत् + जन = सज्जन

त् / द् + ट = ट्ट
उपनिषद् + टीका = उपनिषट्टीका
बृहत् + टीका = बृहट्टीका

अध्याय – 2

समास एवं समास – विग्रह

⇒ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है।

⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)**-समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते है।

सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।

जैसे:-

गंगाजल - गंगा का जल

(पूर्वपद) (उत्तरपद) (समस्त पद) (समास विग्रह)

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही

समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

समास 6 प्रकार के होते हैं

समास के प्रकार Types Of Compound

1. तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
3. अव्ययीभाव समास
4. द्विगु समास
5. बहुव्रीहि समास
6. द्वंद्व समास

1. कर्म तत्पुरुष (द्वितीय तत्पुरुष) (को)
2. करण तत्पुरुष (तृतीय तत्पुरुष) (से, के द्वारा)
3. संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) (के लिए)
4. अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) से (अलग होने के अर्थ से)
5. सम्बन्ध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) (का, की, के)
6. अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) (में,पर)

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव

(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और दिगु

(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व

(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोट:- भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते है।

जैसे – यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति , जब, तब, भर, यावत, हर आदि।

(I) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound

जिस समास में पहला पद अर्थात पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत,

समस्त पद		**विग्रह**
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा
आसमुद्र	-	समुद्र तक
अनुरुप	-	रुपके योग्य
अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक
यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो / जितना सम्भव हो सके
यथोचित	-	उचित रुप में / जो उचित हो

यथा विधि	-	विधि के अनुसार
यथामति	-	मति के अनुसार
यथाशक्ति	-	शक्ति के अनुसार
यथानियम	-	नियम के अनुसार
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
यथासमय	-	समय के अनुसार
यथासामर्थ	-	सामर्थ के अनुसार
यथाक्रम	-	क्रम के अनुसार
प्रतिकूल	-	इच्छा के विरुद्ध
प्रतिमाह	-	प्रत्येक -माह
प्रति दिन	-	प्रत्येक - दिन
भरपेट	-	पेट भर के
हाथों हाथ	-	हाथ ही हाथ में / (एकहाथ से दूसरे हाथ)
परम्परागत	-	परम्परा के अनुसार
थल - थल	-	प्रत्येक स्थान पर
बोटी – बोटी	-	प्रत्येक बोटी
नभ–नभ	-	पूरे नभ में
रंग-रंग	-	प्रत्येक रंग के
मीठा–मीठा	-	बहुत मीठा
चुप्प–चुप्प	-	बिल्कुल चुपचाप
आगे-आगे	-	बिल्कुल आगे
गली–गली	-	प्रत्येक गली
दूर-दूर	-	बिल्कुल दूर
सुबह-सुबह	-	बिल्कुल सुबह
एकाएक	-	एक के बाद एक
दिनभर	-	पूरे दिन
दो-दो	-	दोनों दो / प्रत्येक दोनों
रोम– रोम	-	पूरे रोम मे
नए–नए	-	बिल्कुल नए
हरे-हरे	-	बिल्कुल हरे
बारी–बारी	-	एक एक करके / प्रत्येक करके
बे–मारे	-	बिना मारे
जगह–जगह	-	प्रत्येक जगह
मील–भर	-	पूरे मील
गरमागरम	-	बहुत गरम
पतली-पतली	-	बहुत पतली
हफ्ता भर	-	पूरे हफ्ते
प्रति एक	-	प्रत्येक
एक-एक	-	हर एक / प्रत्येक
धीरे –धीरे	-	बहुत धीरे
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
मनचाहे	-	मन के अनुसार
छोटे-छोटे	-	बहुत छोटे
भरे-पूरे	-	पूरा भरा हुआ
जानलेवा	-	जान लेने वाली
दूरबीन	-	दूर देखने वाली
सहपाठी	-	साथ पढ़ने वाला / वाली
खुला-खुला	-	बहुत खुला
कोना-कोना	-	सारा कोना
मात्र	-	केवल एक
भरा-भरा	-	बहुत भरा
शुरू-शुरू	-	बहुत आरंभ/शुरु में
अंग-अंग	-	प्रत्येक अंग
अहेंतुक	-	बिना किसी कारण के
प्रतिवर्ष	-	वर्ष – वर्ष /हर वर्ष
छातीभर	-	छाती तक
बार-बार	-	बहुत बार
देखते-देखते	-	देखते ही देखते
एकदम	-	अचानक से
रात-रात	-	पूरी रात भर
सालों-साल	-	बहुत साल
रातों-रात	-	बहुत रात
ड़रा–ड़रा	-	बहुत ड़रा
तरह-तरह	-	बहुत तरह के
भरपूर	-	पूरा भर के
सालभर	-	पूरे साल
घर-घर	-	प्रत्येक घर
नए-नए	-	बिल्कुल नए
घूमता- घूमता	-	बहुत घूमता
बेशक	-	बिना शक के
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
अकारण	-	बिना कारण के
घड़ी-घड़ी	-	हर घड़ी
पहले-पहले	-	सबसे पहले
भरसक	-	पूरी शक्ति से
बखूबी	-	खूबी के साथ
निः सन्देह	-	सन्देह के बिना
बेअसर	-	असर के बिना
सादर	-	आदर के साथ
बेकाम	-	बिना काम के
अनजान	-	बिना जाने
प्रत्यक्ष	-	आँख के सामने
बेफायदा	-	फायदे के बिना
बाकायदा	-	कायदे के अनुसार
बेखटके	-	बिना खटके के
निड़र	-	ड़र के बिना
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
प्रतिध्वनि	-	ध्वनि की ध्वनि

(2) तत्पुरुष समास Determinative compound

जिस समास मे बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है एवं पूर्व पद गौंण होता है तथा दोनों पदो वे बीच का कारक- चिन्ह लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते है। तत्पुरुष समास छः प्रकार के होते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

[I] कर्मतत्पुरुष समास (द्वितीय तत्पुरुष):- जिस तत्पुरुष समास में कर्मकारक की विभक्ति 'को' लुप्त हो जाती है, वहाँ कर्मतत्पुरुष समास है। जैसे –

समस्त पद		विग्रह
गगनचुम्बी	-	गगन को चूमने वाला
यश प्राप्त	-	यश को प्राप्त
चिड़ीमार	-	चिड़ियों को मारने वाला
ग्रामगत	-	ग्राम को गया हुआ
रथचालक	-	रथ को चलाने वाला
जेबकतरा	-	जेब को काटने वाला
जनप्रिया	-	जन को प्रिय
स्वर्गीय	-	स्वर्ग को गया
वनगमन	-	वन को गमन
सर्वप्रिय	-	सब को प्रिय
गिरहकट	-	गिरह को काटने वाला गिरह / गांठ
अतिथ्यर्पण	-	अतिथि को अर्पण
गृहागत	-	घर को गया हुआ
मरणासन्न	-	मरण को पहुंचा हुआ
परलोकगमन	-	परलोक को गमन
स्वर्गगत	-	स्वर्ग को गत (गया हुआ)
शरणागत	-	शरण को आगत
भयप्राप्त	-	भय को प्राप्त
स्वर्ग प्राप्त	-	स्वर्ग को प्राप्त
आशातीत	-	आशा को अतीत
मनपसन्द	-	मन को पसन्द
रूपधारी	-	रूप को धारण करने वाला
वर दिखाई	-	वर को दिखाना
मर्म भेदी	-	दिल को भेदने वाला
कार्यकर्ता	-	कार्य को करने वाला
रात जगा	-	रात को जगा हुआ
कठफोड़वा	-	काठ (लकड़ी)को फोड़ने वाला
देशगत	-	देश को गत (गया हुआ)
पाकिटमार	-	पाकिट को मारने (काटने) वाला
विरोधजनक	-	विरोध को जन्म देने वाला
दिल तोड़	-	दिल को तोड़ने वाला
आपत्तिजनक	-	आपति को जन्म देने वाला
हस्तगत	-	हस्त को गया हुआ
प्राप्तोदक	-	उदक (जल) को प्राप्त तक
तिलकुटा	-	तिल को कूटकर बनाया हुआ
जगसुहाता	-	जग को सुहाने वाला
संकटापन्न	-	संकट को प्राप्त आपन्न
विदेशगमन	-	विदेश को गमन सर्वज्ञ
नरभक्षी	-	नरों को भक्षित करने वाला
स्याहीचूस	-	स्याही को चूसने वाला
कनकटा	-	कान को कटवाने वाला
विद्युत मापी	-	विद्युत को मापने वाला
कृष्णार्पण	-	कृष्ण को अर्पण

[II] करण तत्पुरुष समास (तृतीय तत्पुरुष):-जिस तत्पुरुष समास मे करणकारक की विभक्ति 'से', 'के द्वारा' लुप्त हो जाती है, वहाँ करण तत्पुरुष समास है।

समस्त पद		विग्रह
करुणापूर्ण	-	करुणा से पूर्ण
भयाकुल	-	भय से आकुल
रेखांकित	-	रेखा से अंकित
शोकग्रस्त	-	शोक से ग्रस्त
मदान्ध	-	मद से अन्धा
मनचाहा	-	मन से चाहा
पददलित	-	पद से दलित
सूररचित	-	सूर के द्वारा रचित
ईश्वर प्रदत्त-	-	ईश्वर से प्रदत्त
हस्त लिखित	-	हस्त (हाथ) से लिखित
तुलसी कृत	-	तुलसी के द्वारा रचित
दयार्द्र	-	दया से आर्द्र
रत्न जड़ित	-	रत्नों से जड़ित
जन्मरोगी	-	जन्म से रोगी
मनमानी	-	मन से मानी
मुँहमागा	-	मुँह से (द्वारा) माँगा
जन्मांध	-	जन्म से अंधा
वज्रहत	-	वज्र द्वारा हत (मारा हुआ)
प्रशिक्षण	-	विशेष प्रशिक्षण विशेष) द्वारा शिक्षण)
कष्टसाध्य	-	कष्ट से साध्य
मदमाता	-	मद (मस्त)से माता (भरा)
प्रेमातुर	-	प्रेम से आतुर
भुखमरा	-	भूख से मरा हुआ
रोगग्रस्त	-	रोग से ग्रस्त
हस्ताक्षरित	-	हस्त द्वारा अक्षरित
शोकातुर	-	शोक से आतुर
मनगढ़ंत	-	मन से गढ़ी हुई
वाकयुद्ध	-	वाक से युद्ध
सुख युक्त	-	सुख से युक्त
मदशुन्य	-	मद से शून्य
दुखसंतप्त	-	दुख से संतप्त
मनमौजी	-	मन से मौजी
भयभीत	-	भय से भीत
आनन्द उत्सव	-	आनन्द से भरा उत्सव

(4) द्विगु समास (Numeral compound):-

जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है तथा पूर्वपद संख्यावाची शब्द होता है, वहीं द्विगु समास होता है। - अर्थ की दृष्टि से द्विगु समास से किसी समूह या समाहार का बोध होता है अर्थात् यह समास समूहवाची या समाहारवाची होता है।

समस्त पद		विग्रह
सप्तसिन्धु	-	सात सिन्धुओं का समूह
दोपहर	-	दो पहरों का समूह
त्रिलोक	-	तीनों लोकों का समाहार / तीन लोक
चौराहा	-	चार राहों का समूह/ चार राहों का समाहार
नवरात्र	-	नौ रात्रियों का समूह
सप्तऋषि / सप्तर्षि	-	सात ऋषियों का समूह
पंचमढी	-	पाँच मढ़ियों का समूह
सप्ताह	-	सात दिनों का समूह
त्रिकोण	-	तीन कोणों का समाहार
तिरंगा	-	तीन रंगों का समूह
अठन्नी	-	आठ आनों का समाहार
चवन्नी	-	चार आने का समाहार
चौपाया	-	चार पांव वाला
चौमासा	-	चौ (चार) मासों का समूह
नवरत्न	-	(नव + रत्न) नौ रत्नों का समूह
षट्कोण	-	छः कोणों का समूह
सतरंगी	-	सात रंगो का समूह
चारपाई	-	चार पायों का समूह
तिमंजिल	-	तीन मंजिलों का समूह
तितल्ले	-	तीनों तल्लों का समूह
पंचतंत्र	-	पाँच तन्त्रों का समूह
त्रिवेणी	-	तीनों वेणियों का समूह
चतुष्पद	-	चार पादों का समूह
नवग्रह	-	नौ ग्रहों का समूह
चतुर्दिक	-	चार दिशाओ का समूह
त्रिफला	-	तीन फलों का समूह
त्रिभुवन	-	तीन भवनों का समूह

नोट- प्रायः द्विगु समास के समस्त पद एकवचन की तरह प्रयोग में लाये जाते हैं। जैसेः-

1. षट् रस का आनन्द लेना (शुद्ध) – षट् रसों का आनन्द लेना (अशुद्ध)
2. मैंने पंचतन्त्र (ग्रन्थ) पढा (शुद्ध) - मैंने पंचतन्त्र पढे। (अशुद्ध)
3. शताब्दी (न कि सौ वर्ष)
4. त्रिकोण (तीन कोण वाला एक आकार, न कि तीन कोण)
5. शतदल (सौ या अधिक दलों वाला कमल पुष्प, न कि सौ दल)

आदि शब्द एकवचन संज्ञा के रूप में प्रयोग में आते हैं।

कर्मधारय समास और द्विगु समास में अन्तरः-

द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है, जो दूसरे पद की गिनती बताता है, जबकि, कर्मधारय समास का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नही होता है। जैसेः- नवरत्न - नौ रत्नों का समूह (द्विगु समास)

चतुर्वर्ण- चार वर्णों का समूह (द्विगु समास)

पुरुषोत्तम- पुरुषों में जो है उत्तम (कर्मधारय समास)

रक्तोत्पल - रक्त (लाल) है जो उत्पल (कमल) (कर्मधारय समास)

(5) द्वन्द्व (द्वन्द्) समास (Copulative Compound):-

जिस समास में दोनों पद प्रधान हो तथा विग्रह करने पर 'और', अथवा, 'या', 'एवं' लगता हो, वहाँ द्वन्द्व समास होते हैं।

पहचान- दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिन्ह (Hyphen) (-) का प्रयोग होता है। इस समास में एक जैसे दो शब्द आएँगे जैसेः- संज्ञा – संज्ञा, क्रिया -क्रिया, विशेषण - विशेषण आदि।

द्वंद्व समास के तीन प्रकार हैं –

(1) इतरेतर द्वंद्व

(2) समाहार द्वंद्व

(3) वैकल्पिक द्वंद्व

1. **इतरेतर द्वंद्व** – इस समास का विग्रह – (और , तथा , एवं , व) योजक चिन्हों का प्रयोग |

समस्त पद		विग्रह
नदी–नाले	-	नदी और नाले
पाप पुण्य	-	पाप और पुण्य
सुख दुख	-	सुख और दुख
गुणदोष	-	गुण और दोष
देश–विदेश	-	देश और विदेश
आगे–पीछे	-	आगे और पीछे
राजाप्रजा	-	राजा और प्रजा
नरनारी	-	नर और नारी
राधा–कृष्ण	-	राधा और कृष्ण
छल–कपट	-	छल और कपट
अपना–पराया	-	अपना और पराया
गंगायमुना	-	गंगा और यमुना
कपड़ा –लत्ता	-	कपड़ा और लत्ता
वेद–पुराण	-	वेद और पुराण
गाड़ी–घोड़ा	-	गाड़ी और घोड़ा

खराखोटा	खरा और खोटा
गौरी–शंकर	गौरी और शंकर
अन्नजल	अन्न और जल
ऊंच – नीच	ऊंच और नीच
माता – पिता	माता और पिता
यश – अपयश	यश और अपयश
ठण्डा – गरम	ठंडा और गरम
हिन्दु – मुसलमान	हिन्दु और मुसलमान
भला – बुरा	भला या बुरा
तेरी मेरी	तेरी और मेरी
दो चार	दो या चार
इधर – उधर	इधर और उधर
ऊपर – नीचे	ऊपर या नीचे
उठता – गिरता	उठता और गिरता
घर – द्वार	घर और द्वार
बन – ठन	बन और ठन
देश – विदेश	देश और विदेश
नाचना - गाना	नाचना और गाना
देवा - सुर	देव और असुर
दरवाजे – खिड़कियाँ	दरवाजे और खिड़कियाँ
धर्मा - धर्म	धर्म और अधर्म
ऋषियों – मुनियों	ऋषियों और मुनियों
राधा - कृष्ण	राधा और कृष्ण
लड़ाई – झगड़ा	लड़ई और झगड़ा
भाई – बहन	भाई और बहन
हीरा – मोती	हीरा और मोती
रात - दिन	रात और दिन
एक – दूसरे	एक या दूसरे
सीता – राम	सीता और राम
दोपहर – संध्या	दोपहर या संध्या
लव– कुश	लव और कुश
खली – भूसा	खली और भूसा
धनी मानी	धनी और मानी
अच्छा – बुरा	अच्छा या बुरा
खट्टा - मीठा	खट्टा और मीठा
दाएँ – बाएँ	दाएँ या बाएँ
दाल – रोटी	दाल और रोटी
दानें – चारें	दानें और चारें
धूप – दीप	धूप और दीप
मार-पीट	मार और पीट

राधे – श्याम	राधे और श्याम
उछलने – कूदने	उछलने और कूदने
नर – नारी	नर और नारी
आरजू – विनती	आरजू या विनती
लोटा – डोरी	लोटा और डोरी
मरना – जीना	मरना और जीना
आटा – दाल	आटा लौर दाल
गिरते – पड़ते	गिरते और पड़ते
ऊँच – नीच	ऊंच और नीच
आज कल	आज या कल
हानि – लाभ	हानि और लाभ
सोडा – नमक	सोडा और नामक
छोटा – बड़ा	छोटा और बड़ा
जान – पहचान	जान और पहचान
रामलक्ष्मण	राम और लक्ष्मण
सोलह – सत्रह	सोलह या सत्रह
दाल – भात	दाल और भात
रंग – बिरंगे	रंग और बिरंगे
घी –शक्कर	घी और शक्कर
चाय – सत्तू	चाय और सत्तू
जीवन – मरण	जीवन और मरण
छोटे – बड़े	छोटे और बड़े
हाथ – पाँव	हाथ और पाँव
साबुन – तेल	साबुन और तेल
सुख – सुविधाओं	सुख और सुविधाओं
रहन - सहन	रहन और सहन
रोक - टोक	रोक या टोक
इच्छा – आकांक्षा	इच्छा और आकांक्षा
हंसती – खेलती	हंसती और खेलती
पसंद – नापसन्द	पसन्द या ना पसन्द
जाने – माने	जाने और माने
सवाल – जवाब	सवाल और जवाब
पूजा – पाठ	पूजा और पाठ
पढ़े – लिखे	पढ़े और लिखे
प्रचार – प्रसार	प्रचार और प्रसार
पैसा – धेला	पैसा और धेला
समय – असमय	समय या असमय
चेहरे – मोहरे	चेहरे और मोहरे
स्थान – अस्थान	स्थान या अस्थान
रंग – ढंग	रंग और ढंग
फूल – पत्ते	फूल और पत्ते

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

शील –	चरित्र
सिल –	पत्थर (छोटी शिला)
श्व –	आने वाला कल
स्व –	अपना
षष्टि –	60 वर्ष
षष्ठी –	छठी
सुत –	पुत्र
सूत –	धागा , भाट
सबल –	शक्तिशाली
शबल –	रंग – बिरंगा
सुधि –	याद
सुधी –	बुद्धिमान
सर्वदा –	हमेशा
सर्वथा –	सब तरह से
सुरभि –	गंध
सुरभी –	गाय
स्तन –	उरोज
स्तन्य –	दूध

समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द

हिंदी भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं, जिनका उच्चारण एक समान प्रतीत होता है, परंतु उनमें सूक्ष्म अंतर होता है और अर्थ बिल्कुल भिन्न होता है। जैसे – पुरुष, परुष इनका उच्चारण तो लगभग एक ही जैसा है, परंतु अर्थ (पुरुष – मर्द, परुष – अप्रिय) बिल्कुल भिन्न है। इसी तरह के कुछ शब्द नीचे दिए जा रहे हैं।

- अंश – भाग, हिस्सा
- अंस – कंधा
- अनल – आग
- अनिल – वायु
- अचल – पर्वत
- अचला – पृथ्वी
- अकार – 'अ' अक्षर
- आकार – रूप-रेखा
- अजात – न पैदा हुआ

अध्याय – 12

वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द

अच्छी रचना के लिए आवश्यक है कि कम से कम शब्दों में विचार प्रकट किए जाए। और भाषा में यह सुविधा भी होनी चाहिए कि वक्ता या लेखक कम से कम शब्दों में अर्थात् संक्षेप में बोलकर या लिखकर विचार अभिव्यक्त कर सके। कम से कम शब्दों में अधिकाधिक अर्थ को प्रकट करने के लिए 'वाक्यांश या शब्द-समूह के लिए एक शब्द' का विस्तृत ज्ञान होना आवश्यक है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से वाक्य-रचना में संक्षिप्तता, सुन्दरता तथा गंभीरता आ जाती है। भाषा में कई शब्दों के स्थान पर एक शब्द बोल कर हम भाषा को प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाते हैं ।

कुछ वाक्यांशों के लिए एक शब्द –

'अ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जो सबसे आगे रहता हो - अग्रणी
- किसी आदरणीय का स्वागत करने के लिए चलकर कुछ आगे पहुँचना - **अगवानी**
- जिसकी गहराई या थाह का पता न लग सके - **अगाध**
- जो गाये जाने योग्य न हो - **अगेय**
- जो छेदा न जा सके - **अछेद्य**
- जिसका कोई शत्रु पैदा ही न हुआ हो - **अजातशत्रु**
- जिसे जीता न जा सके - **अजेय**
- जिसके खंड या टुकड़े न किये गये हों - **अखंडित**
- जो खाने योग्य न हो - **अखाद्य**
- जो गिना ना जा सके - **अगणित/अनगिनत**
- जिसके अंदर या पास न पहुँचा जा सके - **अगम्य**
- जिसके पास कुछ भी न हो - **अकिंचन**
- जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो - **अक्षम**
- जिसका खंडन न किया जा सके - **अखंडनीय**
- जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा न हो - **अगोचर**
- दूर तक फैलने वाला अत्यधिक नाशक आग - **अग्निकांड**
- जिसका जन्म पहले हुआ हो - **अग्रज**
- जो किसी देन या पारिश्रमिक मद्दे पहले से ही सोचे - **अग्रिम**
- जो अंडे से जन्म लेता है - **अंडज**
- किसी कथा के अन्तर्गत आने वाली कोई दूसरी कथा - **अंतःकथा**
- राजभवन के अंदर महिलाओं का निवास स्थान - **अंतःपुर**
- मन में आप से उत्पन्न होने वाली प्रेरणा - अंतप्रेरणा
- अंक में सोने वाला - अंकशायी
- अंक में स्थान पाया हुआ – **अंकस्थ**
- मूलकथा में आने वाला प्रसंग , लघु कथा - **अंतःकथा**
- महल का वह भाग जहाँ रानियाँ निवास करती है – **अंतःपुर**

- धरती और स्वर्ग (आकाश) के बीच का स्थान - ***अंतरिक्ष***
- मन में होने वाला स्वाभाविक ज्ञान - ***अंतर्ज्ञान***
- जो सबके मन की बात जनता हो - ***अंतर्यामी***
- वह विद्यार्थी जो आचार्य के पास ही निवास करता हो ***अंतेवासी***
- जिसका जन्म निम्न वर्ण में हुआ है - ***अंत्यज***
- अपने हिस्से या अंश के रूप में कुछ देना - ***अंशदान***
- जिसको कहा न जा सके - ***अकथनीय***
- जिसको काटा न जा सके ***अकाट्य***
- जिसके पास कुछ भी नहीं हो - ***अकिंचन***
- जो पासे के खेल में कुशल हो - ***अक्षधूर्त***
- जो क्षमा न किया जा सके - ***अक्षम्य***
- जिसका खंडन ने किया जा सके - ***अखंड / अखंडनीय***
- जो खाने योग्य न हो - ***अखाद्य्य***
- जहाँ पहुँचा न जा सके - ***अगम्य***
- जिसकी निंदा न की गई हो - ***अगर्हित***
- जो बहुत घर हो - ***अगाध***
- जो इंद्रियों (गो)द्वारा न जाना जा सके - ***अगोचर***
- जो पहले जन्मा हो (बड़ा भाई) - ***अग्रज***
- आगे का विचार करने वाला - ***अग्रसोची***
- जिस पर चिंतन न किया गया हो - ***अचिंतित***
- जो अपने स्थान या स्थिति से अलग न किया जा सके - ***अच्युत***
- प्रसूता (संतान को जन्म देनेवाली) को दिया जाने वाला भोजन - ***अछवानी***
- जिसका जन्म न हो - ***अज / अजन्मा***
- जो कभी बूढ़ा न हो - ***अजर***
- जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो - ***अजातशत्रु***
- जिसको जीता न जा सके - ***अजेय***
- जो कुछ नहीं जानता हो - ***अज्ञ / अज्ञानी***
- जिसका पता न हो - ***अज्ञात***
- जिसे जाना न जा सके - ***अज्ञेय***
- जो अपनी बात से टले नहीं - ***अटल***
- न टूटने वाला - ***अटूट***
- जो अपनी जगह से न डिगे - ***अडिग***
- अंड से जन्म लेने वाला - ***अंडज***
- किसी बात पर व्यर्थ प्रलाप करना - ***अतिकथा***
- मर्यादा का उल्लंघन करके किया हुआ - ***अतिकृत***
- जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो - ***अतिथि***
- आवश्यकता से अधिक बरसात - ***अतिवृष्टि***
- किसी बात को अत्यधिक बढ़ाकर कहना - ***अतिश्योक्ति***
- जिसका ज्ञान इंद्रियों के द्वारा न हो - ***अतींद्रिय***
- जो व्यतीत हो गया हो - ***अतीत***
- जो ऊँचा न हो - ***अतुंग***
- शीघ्रता का अभाव - ***अत्वरा***
- जिसकी गहराई का पता न लग सके - ***अथाह***
- जिसका दमन न किया जा सके - ***अदम्य***
- जिसे देखा न जा सके - ***अदृश्य***
- जो पहले न देखा गया हो - ***अदृष्टपूर्व***
- जो आज तक से संबंध रखता है - ***अदयतन***
- जिसके बराबर दूसरा न हो - ***अद्वितीय***
- जो ऋण लेता है (कर्जदार) - ***अधमर्ण***
- जिस पर किसी ने अधिकार कर लिया हो - ***अधिकृत***
- पहाड़ के ऊपर की (समतल) जमीन (टेबिल लैंड) - ***अधित्यका***
- किसी पक्ष का समर्थन करने वाला वकील - ***अधिवक्ता***
- वैधानिक सूचना जो सरकार द्वारा राजपत्र में प्रकाशित हो - ***अधिसूचना***
- अध्ययन किया हुआ - ***अधीत***
- नीचे की ओर मुख किया हुआ - ***अधोमुखी***
- राष्ट्रपति / राज्यपाल द्वारा जारी आदेश/ सीमित अवधि का आदेश - ***अध्यादेश***
- ज्ञात या कल्पित तथ्यों के आधार पर लिया गया निर्णय - ***अध्याहरण***
- वह स्त्री जिसके पति ने दूसरा विवाह कर लिया हो - ***अध्यूढ़ा***
- जो बिना अंतर (गैप)के घटित हो - ***अनंतर***
- अन्य से संबंध न रखनेवाला, किसी एक में ही आस्था रखने वाला - ***अनन्य***
- जिसका कोई दूसरा उपाय न हो - ***अनन्योपाय***
- जिसे किसी बात का पता न हो - ***अनभिज्ञ***
- जिसके विषय में कोई ज्ञान न हो - ***अनवगत, अज्ञात***
- जो सदा से चलता आ रहा है - ***अनवरत / सनातन***
- जिसका कोई आदि / प्रारंभ न हो - ***अनादि***
- कनिष्टा (सबसे चोटी) और मध्यमा के बीच की ऊँगली - ***अनामिका***
- जो दोहराया न गया हो - ***अनावर्त***
- जो ढका हुआ न हो - ***अनावृत / अपरिछिन्न***
- वर्षा का बिलकुल न होना - ***अनावृष्टि***
- जिसे बुलाया न गया हो - ***अनाहूत***
- वह सिद्धांत जो हर वस्तु को नश्वर मानता हो - ***अनित्यवादी***
- पलक को झपकाए बिना - ***अनिमेष , निर्निमेष***
- जिसका विरोध न हुआ हो या न हो सके – ***अनिरुद्ध , अविरोधी***
- जिसका निवारण न किया जा सके / जिसे करना आवश्यक हो - ***अनिवार्य***
- किसी के दुख से दुखी होकर उस पर दया करना - ***अनुकंपा***
- जो अनुग्रह (कृपा) से युक्त हो - ***अनुगृहित***
- किसी छोटे पर प्रसन्न होकर उसका उपकार करना - ***अनुग्रह***
- किसी कार्य के लिए दी जाने वाली सहायता - ***अनुदान***
- जिसकी उपमा न दी जा सके - ***अनुपम***

- जिसका अनुभव किया गया हो - ***अनुभूत***
- किसी मत या प्रस्ताव का समर्थन करने की क्रिया - ***अनुमोदन***
- किसी संप्रदाय या सिद्धांत का समर्थन करने वाला - ***अनुयायी***
- प्रेम उत्पन्न करने वाला - ***अनुरंजक***
- वह व्यक्ति जो किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति आसक्त हो - ***अनुरक्त***
- परंपरा से चली आई कथा - ***अनुश्रुति***
- पहले लिखे गए पत्र का स्मरण करते हुए लिखा गया पत्र- ***अनुस्मारक***
- अनुवाद किया हुआ / जिस ग्रंथ का अनुवाद हो गया हो - ***अनूदित***
- जिसका मन कहीं अन्यत्र लगा हो - ***अन्यमनस्क***
- नीचे की ओर लाना या खींचना - ***अपकर्षक***
- जो पहले पढ़ा न गया हो - ***अपठित***
- जो भोजन रोगी के लिए निषिद्ध है - ***अपथ्य***
- वह समय जो दोपहर के बाद आता है - ***अपराह्न***
- आवश्यकता से अधिक धन हो तो उसका त्याग - ***अपरिग्रह***
- जिसे मापा न जा सके - ***अपरिमेय***
- साधारण नियम के विरुद्ध बात - ***अपवाद***
- जो धन को व्यर्थ ही खर्च करता हो - ***अपव्ययी***
- जिसकी आकृति का कोई और न मिले - ***अप्रतिरूप***
- जो प्रमाण से सिद्ध न हो सके - ***अप्रमेय***
- जिस वस्त्र को पहना न गया हो , न जोता हुआ खेत - ***अप्रहत***
- जिस पर अभियोग (अपराध का आरोप) लगाया गया हो - ***अभियुक्त***
- जो किसी पर अभियोग लगाए - ***अभियोगी***
- किसी विशेष वस्तु की हार्दिक इच्छा - ***अभिलाषा***
- किसी काम के बार-बार करने की तीव्र इच्छा - ***अभीप्सा***
- जिसको भेदा न जा सके - ***अभेद्य***
- जो कभी मरे नहीं - ***अमर***
- इंद्र की पुरी - ***अमरावती***
- जो मनुष्य के लिए उचित न हो - ***अमानुषिक***
- जो बिन माँगे मिल जाए - ***अयाचित***
- जिसको प्राप्त न किया जा सके - ***अलभ्य***
- जो इस लोक / संसार से संबंधित न हो - ***अलौकिक***
- जो कम जनता हो - ***अल्पज्ञ***
- जो कम बोलता हो - ***अल्पभाषी***
- आदेश की अवहेलना - ***अवज्ञा***
- मानसिक भाव को छिपाना - ***अवहित्था***
- न कहने योग्य वचन - ***अवाच्य***
- जिसका विभाजन न किया गया हो - ***अविभक्त***
- जिसका विभाजन न किया जा सके - ***अविभाज्य***
- शोक से रहित हो - ***अशोक***
- आठ पदवाला - ***अष्टपदि***
- जिस पुस्तक में आठ अध्याय हों / पाणिनि का व्याकरण ग्रंथ - ***अष्टाध्यायी***
- जो सहनशील न हो - ***असहिष्णु***
- जिसे साधा न जा सके / जो वश में न आ सके - ***असाध्य***
- जो स्त्री सूर्य भी न देख सके (घर के अंदर ही रहने वाली) - ***असूर्यपश्या***
- फेंककर चलाया जाने वाला हथियार - ***अस्त्र***

'आ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- अग्नि से संबधित या आग का - ***आग्नेय***
- पूरे जीवन में - ***आजीवन***
- जिस पर किसी का आतंक छाया हो – ***आतंकित***
- जो बहुत क्रूर स्वभाव वाला हो - ***आततायी***
- जो मृत्यु के समीप हो - ***आसन्नमृत्यु/मरणासन्न***
- बालक से लेकर वृद्ध तक - ***आबालवृद्ध***
- जिसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हो - ***आजानुबाहु***
- जो जन्म लेते ही मर जाए - ***आदण्डपात***
- जिसे विश्वास या दिलासा दिलाया गया हो - ***आश्वस्त***
- आशा से बहुत अधिक - ***आशातीत***
- वह कवि जो तत्काल कविता कर डालता है - ***आशुकवि***
- जो अपनी हत्या कर लेता है - ***आत्मघाती***
- अपने आप को किसी के हाथ सौंपना या समर्पित करना- ***आत्मसमर्पण***
- दूसरों के (सुख के) लिए अपने सुखों का त्याग - ***आत्मोत्सर्ग***
- वह जिस पर हमला किया गया हो - ***आक्रांत***
- जिसने हमला किया हो - ***आक्रांता***
- वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो - ***आगतपतिका***
- किसी बात पर बार-बार ज़ोर देना - ***आग्रह***
- जिसे सूंघा जा सके - ***आघ्रेय***
- जो जन्म लेते ही गिर या मर गया हो / जो जन्म से ही गिरा हुआ हो - ***आजन्मपात***
- जो बहुत क्रूर व्यवहार करता हो - ***आततायी***
- अपने प्राण खुद ही समाप्त कर लेनेवाला / अपनी हानि स्वयं करने वाला - ***आत्मघाती***
- दूसरे के हित में अपना जीवन त्याग क्र देने वाला - ***आत्मोत्सर्ग***
- सर्वप्रथम किसी मत या वाद का प्रवर्तन करनेवाला - ***आदि प्रवर्तक***
- आदि से लेकर अंत तक - ***आद्युपांत***
- जिसका संबंध आत्मा से हो - ***आध्यात्मिक***
- सिर से पाँव तक - ***आपादमस्तक***
- तुलना द्वारा प्राप्त - ***आपेक्षिक***
- मृत्युपर्यंत - ***आमरण***
- घर के सामने का मंच - ***आलिंद***
- जो गुण-दोष का विवेचन करता हो - ***आलोचक***
- आशा से कहीं अधिक बढ़कर - ***आशातीत***

- जिसकी घोषणा की गयी हो - **घोषित**
- घास खोदकर जीवननिर्वाह करने वाला – **घसियारा**

'च' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- कुबेर का बगीचा - **चैत्ररथ**
- जिसके चूड़ पर चन्द्र हो - **चन्द्रचूड़**
- जो चन्द्र धारण करता हो - **चंद्रधारी**
- अधिकार प्राप्त व्यक्तियों का समूह जो किसी चयन मंडल में बैठता हो – **चयनक, चयनकर्ता**
- ब्याज का वह प्रकार जिसमें मूल के ब्याज पर भी ब्याज लगता है - **चक्रवृद्धि**
- जिसके मस्तक पर चन्द्रमा हो - **चन्द्रमौलि**
- जिनके चार पैर होते हैं - **चतुष्पद**
- वह मास जो चन्द्रमा की गति के अनुसार गिना जाता है- **चंद्रमास**
- जिसका चिंतन या जिसकी चिंता करना उचित हो - **चिंतनीय**
- चित्त को चुराने वाला - **चित्तचोर**
- जिस सेना में हाथी, घोड़े, रथी और पैदल हो - **चतुरंगिणी**
- चिरकाल तक जीवित रहने वाला - **चिरंजीवी**
- जिसके हाथ में चक्र है - **चक्रपाणि**
- जिस (देवता) की चार भुजाएँ हैं – **चतुर्भुज (विष्णु भगवान)**
- जिसके सिर पर चन्द्र-कला हो (शिव) - **चन्द्रचूड़ / चंद्रशेखर**
- आँख से संबंध रखनेवाला - **चाक्षुष**
- कार्य करने की इच्छा करनेवाला - **चिकीर्षु**
- लंबे समय तक जीनेवाला - **चिरंजीवी**
- जो बहुत समय तक ठहर सके - **चिरस्थायी**

'छ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- छः महीने का समय - **छमाही**
- अकस्मात कहीं भी आकर छापा मारने वाला - **छापामार**
- सेना के ठहरने का स्थान - **छावनी**
- किसी काम या व्यक्ति में छिद्रों, त्रुटियों व दोषों को ढूँढ़ने का काम - **छिद्रान्वेषण**
- पत्थर को गढ़ने वाला औजार - **छैनी**
- कर्मचारी आदि को छाँटकर निकाल देने का काम - **छँटनी**
- छात्र-छात्राओं के रहने का स्थान - **छात्रावास**
- जहाँ किताबें छपती हैं - **छापाखाना**
- दूसरों के छिद्र खोजने वाला - **छिद्रान्वेषी**
- वह स्थान जहाँ सैनिक निवास करते हों - **छावनी**
- किसी काम या व्यक्ति में छिद्रों , अर्थात् दोषों को ढूंढने का काम - **छिद्रानवेषण**
- जो दूसरों में केवल दोषों को ही खोजता हो - **छिद्रान्वेषी**

'ज' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- पेट में लगने वाली आग - **जठराग्नि**
- जो जन्म से ही अंधा है - **जन्मान्ध**
- महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्म की कथाएँ - **जातक**
- जल लेने के बदले में दिया जाने वाला टैक्स - **जलकर**
- जिसे जानना आवश्यक हो - **ज्ञेय**
- जो वृद्ध होने से जर्जर हो गया हो - **जराजीर्ण**
- जानने की इच्छा - **जिज्ञासा**
- ग्रहण करने की इच्छा - **जिघृक्षा**
- जो जरायु (गर्भ की थैली) से जन्म लेता है - **जरायुज**
- जल में जन्म लेने वाला - **जलज**
- इंद्रियों को जीतने वाला - **जितेन्द्रिय**
- जीवित रहने की इच्छा - **जिजीविषा**
- जीतने की इच्छा रखने वाला - **जिगीषु**
- जन्म से सौ वर्ष का समय – **जन्मशती**
- एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलने वाला - **जंगम**
- पेट या जठर की आग – **जठरानल**
- जन प्रतिनिधियों द्वारा परिचालित शासन – व्यवस्था - **जनतंत्र**
- जीतने की इच्छा - **जिगीषा**
- किसी को जीत लेने की इच्छा रखने वाला - **जिगीषु**
- भोजन की इच्छा रखने वाला - **जिघत्सु**
- भोजन करने की इच्छा - **जिघत्सा**
- किसी को मारने की इच्छा - **जिघांसा**
- मारने की इच्छा करने वाला - **जिघांसु**
- ग्रहण करने / पकड़ने की इच्छा - **जिघृक्षा**
- जिंदा रहने की इच्छा - **जिजीविषा**
- अधिक समय तक जीने की इच्छा रखने वाला - **जिजीविषु**
- जानने की इच्छा – **जिज्ञासा**
- जानने की इच्छा रखने वाला - **जिज्ञासु**
- जो जीतने के योग्य हो - **जेय**

'झ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- झूठ बोलने वाला - **झूठा**
- झींझीं की तेज आवाज करने वाला कीड़ा - **झींगुर**
- वह कपड़ा जिससे कोई चीज झाड़ी जाए - **झाड़न**
- वर्षा सहित तेज हवा - **झंझावत**
- बहुत गहरा और बहुत बड़ा प्राकृतिक जलाशय - **झील**
- जिसके लंबे-लंबे बिखरे बाल हों - **झबरा**
- काँटेदार झाड़ियों का समूह - **झाड़झंखाड़**
- अपनी धुन (झक) में मस्त रहने वाला - **झक्की**
- झमेला करने वाला – **झमेलिया**

'ट' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- लगातार घंटा बजने से होने वाला टन-टन शब्द - **टनाटन**
- सिक्के ढालने का कारखाना - **टकसाल**
- अधिक देर तक रहने वाला या चलने वाला - **टिकाऊ**
- किराये पर चलने वाली मोटरगाड़ी - **टैक्सी**
- टाइप करने की कला - **टंकण**

- चारों ओर जल से घिरा हुआ भू-भाग - **टापू**
- किसी ग्रन्थ या रचना की टीका करने वाला - **टीकाकार**
- मूल बातों को संक्षेप में लिखना – **टिप्पणी**
- जहाँ सिक्कों की ढलाई होती है – **टकसाल**

'ठ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- ठेका लेने वाला - **ठेकेदार**
- दिनरात ठाढ़े (खड़े) रहने वाले साधु - **ठाढ़ेश्वरी**
- ठगों का मोदक जिसमें बेहोश करने की चीज मिली रहती है - **ठगमोदक**
- जो छोटे कद का हो - **ठिगना**
- ठनठन की आवाज - **ठनकार**
- ठूसकर भरा हुआ – **ठसाठस**

'ड' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- ड्योढ़ी पर रहने वाला पहरेदार - **ड्योढ़ीदार**
- पत्रों आदि को दूरस्थ स्थानों पर पहुँचाने वाली सेवा - **डाक सेवा**
- डाका मारने वाला - **डकैत**
- घर-घर जाकर लोगों की डाक पहुँचाने वाला कर्मचारी - **डाकिया**
- डंडी मारने वाला - **डंडीमार**
- डफली बजाने वाला - **डफालची/डफाली**

'ढ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- ढालने का काम - **ढलाई**
- ढोलक बजाने वाला - **ढोलकिया**
- ढीला होने का भाव - **ढिलाई**
- ढिंढोरा पीटने वाला - **ढिंढोरिया**
- जिसमें ढाल हो - **ढालू/ढालवाँ**
- ढोंग रचने वाला – **ढोंगी**

'त' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- अध्यात्म के तत्त्वों को जानने वाला - **तत्त्वज्ञ**
- उसी समय का - **तत्कालीन**
- किसी पद अथवा सेवा से मुक्ति का पत्र - **त्यागपत्र**
- घनी अंधेरी रात –**तमिस्रा**
- चोरी छिपे और चुंगी शुल्कादि दिए बिना माल लाकर बेचने वाला - **तस्कर**
- ताँबे के रंग के समान लाल रंग – **ताम्ररक्त, ताम्रवर्णी**
- एक व्यक्ति द्वारा चलायी जाने वाली शासन प्रणाली - **तानाशाही**
- तैरने की इच्छा – **तितीर्षा**
- किसानों को ऋण के रूप में दी गई आर्थिक सहायता - **तकाबी**
- वह स्थान जहाँ तोपें और बारूद आदि रखा जाता है – **तोपखाना**
- जो त्यागने योग्य हो – **त्याज्य**
- जो किनारे से सटे हुए हो – **तटवर्ती**
- जो किसी कार्य या चिंतन में डूबा हुआ हो – **तल्लीन**
- शीतल, मंद व सुगंधित वायु – **त्रिविध वायु**
- किसी भी पक्ष का समर्थन न करने वाला – **तटस्थ**
- जो तर्क के आधार पर ठीक सिद्ध हो – **तर्कसंगत**
- वह जो बराबर तपस्या करता है – **तपस्वी**
- तैर कर पार होने की इच्छा रखने वाला – **तितीर्षु**
- वह राजकीय धन जो किसानों की सहायता हेतु दिया जाता है – **तकाबी**
- जो किसी कार्य के चिंतन में डूबा हुआ हो – **तल्लीन**
- जो चोरी –छिपे माल लाता –ले जाता हो – **तस्कर**
- दैहिक, दैविक और भौतिक दुख – **तापत्रय**
- तैरकर पार करने के इच्छा – **तितीर्षा**
- बाणों को रखने का साधन – **तूणीर / तरकस**
- जो त्याग देने योग्य हो – **त्याज्य**
- वह व्यक्ति जो छुटकारा दिलाता है/ रक्षा करता है – **त्राता**

'थ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जमी हुई गाढ़ी चीज की मोटी तह – **थक्का**
- चौपायों के बाँधने का स्थान – **थान**
- व्यापारियों द्वारा किया जाने वाला व्यापार – **थोक व्यापार**
- कुछ निश्चित लंबाई का कपड़ा – **थान**
- अनावश्यक मांसल और मोटा शरीर – **थुलथुल**
- किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु - **थाती/धरोहर/अमानत**
- पुलिस की बड़ी चौकी – **थाना**
- थाने का प्रधान अधिकारी – **थानेदार**

'द' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जिसे दण्ड दिया जा सकता है या दण्डित किया जाना चाहिए – **दंडनीय**
- दिन के समय अपने प्रिय से मिलने जाने वाली नायिका – **दिवाभिसारिका**
- देखने की इच्छा – **दिदृक्षा**
- व्यक्ति जो अपने ऋण चुकता करने में असमर्थ हो गया हो – **दिवालिया**
- जिसका चित्त किसी एक बात पर स्थिर न हो – **दुचित्तता**
- जिसकी बाहें लंबी हो – **दीर्घबाहु**
- जिसे भेदना या तोड़ना कठिन हो – **दुर्भेद्य**
- नापाक इरादों से की जाने वाली मंत्रणा या साजिश - **दुरभिसंधि**
- पुत्री का पुत्र – **दौहित्र**
- जिसे देवता भी पूजते हैं – **देवाराध्य**
- वह जो अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे – **दृढ़प्रतिज्ञ**
- जिसके पेट में माँ ने रस्सी बांध दी थी – **दामोदर**
- पुत्री की पुत्री – **दौहित्री**
- काला पानी की सजा पाया हुआ कैदी – **दामुल कैदी**
- जो द्वार की रक्षा करता है – **द्वारपाल**
- लोगों में परंपरा से चली आई कथा – **दंतकथा**
- संकुचित विचार रखनेवाला – **दकियानूस**

6. मैं उनको मिल कर प्रसन्न हुआ।	6. मैं उनसे मिलकर प्रसन्न हुआ।
7. सबों ने मान लिया कि पृथ्वी घूमती है।	7. सभी ने मान लिया कि पृथ्वी घूमती है।
8. अपन ठीक रास्ते पर हैं।	8. हम ठीक रास्ते पर हैं।
9. तेरे को कहाँ जाना है ?	9. तुम्हें कहाँ जाना है?
10. मेरे को पता नहीं वह कहाँ गया ?	10. मुझे पता नहीं वह कहाँ गया?
11. आपका उत्तर मुझ से अच्छा है।	11. आपका उत्तर मेरे उत्तर से अच्छा है।
12. हम हमारी कक्षा में गये।	12. हम अपनी कक्षा में गये।
13. हमारे वाला मकान खाली है।	13. हमारा मकान खाली है।
14. वह आपको और मुझ को देख कर भाग गया।	14. वह आप और मुझे देखकर भाग गया।
15. तुम्हारे से कोई काम नहीं हो सकता।	15. तुमसे कोई काम नहीं हो सकता।
16. हमको सबको देश पर मर मिटना है।	16. हम सब को देश पर मर मिटना है।
17. पिताजी ने मुझको कहा।	17. पिताजी ने मुझे कहा।
18. मेरे को यह रुचिकर नहीं।	18. मुझे यह रुचिकर नहीं।
19. आप और मैंने मिलकर यह काम किया।	19. आपने और मैंने मिलकर यह काम किया।
20. मेरे को दो निबन्ध लिखने हैं।	20. मुझे दो निबन्ध लिखने हैं।

8. क्रिया सम्बन्धी :

सही क्रिया रूप प्रयुक्त न होने पर भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. मैंने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा देखी।	1. मैंने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की।
2. यह आप पर निर्भर करता है।	2. यह आप पर निर्भर है।
3.सर्वत्र आधुनिकीकरण करना ठीक नहीं।	3.सर्वत्र आधुनिकीकरण ठीक नहीं।
4. राम ने गुरुजी से प्रश्न पूछा।	4. राम ने गुरुजी से प्रश्न किया।
5. प्रस्तुत पंक्तियाँ 'भाभी' पाठ से ली हैं।	5. प्रस्तुत पंक्तियाँ 'भाभी' पाठ से ली गई हैं।
6. आप आम खाके देखों।	6. आप आम खाकर देखें।
7. अब तुम जाइये।	7. अब तुम जाओ। अब आप जाइये।
8. मेरे नौकर ने नौकरी त्याग दी।	8. मेरे नौकर ने नौकरी छोड़ दी।
9. वह क्या करना माँगता है ?	9. वह क्या करना चाहता है ?
10. उसने मुझे गाली निकाली।	10. उसने मुझे गाली दी।
11. गत रविवार वह जोधपुर जायेगा।	11. गत रविवार वह जोधपुर गया।
12. हम रात में भोजन खाते हैं।	12. हम रात में भोजन करते हैं।
13. राम को यहाँ आने के लिए बोल दो।	13. राम को यहाँ आने के लिए कह दो।
14. तुम्हारे गये पर जया आई थी।	14. तुम्हारे जाते ही जया आई थी।
15. नदी पार हो गई।	15. नदी पार कर ली गई।
16. बालक मिठाई और दूध पी कर सो गया।	16. बालक मिठाई खाकर और दूध पी कर सो गया।
17. गुरु जी ने शिष्य को आशीर्वाद प्रदान किया।	17. गुरु जी ने शिष्य को आशीर्वाद दिया।
18. भीतर प्रवेश करना निषेध है।	18. प्रवेश निषेध है।
19. गाँधी जी को भुलाया नहीं जा सकता।	19. गाँधीजी को भूला नहीं जा सकता।
20. उसने क्या संकल्प लिया?	20. उसने क्या संकल्प किया?

9. **महावरे के कारण :**

मुहावरे का सही प्रयोग न होने या उसमें पाठान्तर होने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. प्रधानमंत्री ने देश का धुआँधार दौरा किया।	1. प्रधानमंत्री ने देश का तूफानी दौरा किया।
2. पानी पीकर नाम पूछना निरर्थक हैं	2. पानी पीकर जात पूछना निरर्थक है।
3. प्रेम करना तलवार की नोंक पर चलना है।	3. प्रेम करना तलवार की धार पर चलना है।
4. दुश्मनों ने हथियार रख दिये।	4. दुश्मनों ने हथियार डाल दिये।
5. आजकल भ्रष्टाचार के बाजार गर्म हैं।	5. आजकल भ्रष्टाचार का बाजार गर्म है।
6. चोरी करते पकड़े जाने पर, उस पर घड़ों पानी गिर गया।	6. चोरी करते पकड़े जाने पर, उस पर घड़ों पानी पड़ गया।
7. कुसंगति से उस के तन पर कालिख पुत गई।	7. कुसंगति से उसके मुख पर कालिख पुत गई।
8. युग परिवर्तन का बीड़ा कौन चबाता है ?	8. युग परिवर्तन का बीड़ा कौन उठाता है ?
9. तेरी बातें सुनते सुनते मेरे कान भर गये।	9. तेरी बातें सुनते सुनते मेरे कान पक गये।
10. मेरे तो साँस में दम आ गया।	10. मेरे तो नाक में दम आ गया।

10. **संयोजक शब्द सम्बन्धी :**

सही संयोजक शब्द नहीं लगाने पर भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. यदि वह रुपया, माँगता, तब मैं अवश्य देता।	1. यदि वह रुपया माँगता तो मैं अवश्य देता।
2. जैसा मोहन ने लिखा, जैसा तुम भी लिखो।	2. जैसा मोहन ने लिखा, वैसा तुम भी लिखो।
3. जब राम ने लंका में प्रवेश किया तो बन्दरों ने बहुत आनन्द मनाया।	3. जब राम ने लंका में प्रवेश किया तब बन्दरों ने बहुत आनन्द मनाया।
4. यद्यपि उसने उद्योग किया, पर उसे सफलता नहीं मिली।	4. यद्यपि उसने उद्योग किया, तथापि उसे सफलता नहीं मिली।
5. जैसा लिखो, जैसा मोहन ने लिखा।	5. ऐसा लिखो, जैसा मोहन ने लिखा।
6. जैसा बोओगे, उसी प्रकार काटोगें।	6. जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।
7. ज्यों ही मैं पहुँचा, वह उठ गया।	7. ज्यों ही मैं पहुँचा, त्यों ही वह उठ गया।
8. यह काम करो नहीं तो अपने घर जाओ।	8. यह काम करो या अपने घर जाओ।
9. क्योंकि वह मोटा है अतः वह धीरे चलता है।	9. क्योंकि वह मोटा है इसलिए वह धीरे चलता है।
10. आप इसी समय रवाना हो जाइये, क्योंकि आप को गाड़ी मिल जाय।	10. आप इसी समय रवाना हो जाइये, ताकि आपको गाड़ी मिल जाय।

11. **अशुद्ध वर्तनी के कारण :**

वाक्य में प्रयुक्त अशुद्ध वर्तनी से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. ताजमहल की सौन्दर्यता अनुपम है।	1. ताजमहल का सौन्दर्य अनुपम है।
2. महात्मा के सदोपदेश सुनने चाहिए।	2. महात्मा के सदुपदेश सुनने चाहिए।
3. 'कामायनी' के रचियता प्रसाद हैं।	3. कामायनी के रचयिता प्रसाद हैं।
4. पूज्यनीय पिताजी आ रहे हैं।	4. पूजनीय पिताजी आ रहे हैं।
5. पधार कर अनुग्रहीत करें।	5. पधार कर अनुगृहीत करें।
6. देश की दुरावस्था शोचनीय है।	6. देश की दुरवस्था शोचनीय है।
7. व्यक्ति यौवनावस्था में भूलें करता है।	7. व्यक्ति यौवन में भूलें करता है।
8. यहाँ श्रृंगार सामग्री मिलती है।	8. यहाँ शृंगार सामग्री मिलती है।
9. मन्त्री मण्डल की बैठक आज होगी।	9. मन्त्रिमंडल की बैठक आज होगी।

in danger, in trouble,in debt,in comparison,in fact जैसे phrases के बीच में article का प्रयोग नहीं होता है

20. (c) little से पहले a लगेगा a little का अर्थ होता है 'थोडा -सा'

Chapter – 2

Noun (संज्ञा)

'किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण, कार्य या अवस्था के नाम को Noun (संज्ञा) कहा जाता है। A noun is a name of a person ,place, animal , thing or idea etc.

'हर वो वस्तु जिसका नाम हो जिसे हम देख सकते हो, महसूस कर सकते हो, छु सकते हो noun कहलाता है जैसे :-

किसी person (व्यक्ति) का नाम :- boy , rita etc.
Animals name:- cat , cackroach etc.
Places name :- street , banglore etc.
Objects name :- table , wire etc.
Substances name :- gold , glass etc.
Qualities name:- Happines, sorrow etc.
Measures name :- inch ,pound etc.

Noun को सात प्रकार से बाँटा जा सकता है -

1. Proper Noun (व्यक्तिवाचक)
2. Common Noun (जातिवाचक)
3. Collective Noun (समूहवाचक)
4. Material Noun (द्रव्यवाचक)
5. Abstract Noun (भाववाचक)
6. Countable noun (संख्यावाचक)
7. Non-countable noun (असख्यावक)

- Proper Noun, common noun ,collective noun and material noun इन्हें Concrete noun भी कहते हैं ये abstract noun के opposite (विपरीत) होते हैं। concrete nouns ऐसी वस्तुओं के नाम होते हैं जिनका physical existence होता है।

RULES TO FIND A NOUN
(NOUN की पहचान) :-

- By putting who,whom,what with work done (किसने काम किया) we find out noun.
  जैसे : sumit is playing football. (सुमित फुटबॉल खेल रहा है)
  अब आप खुद से सवाल करके noun पहचान सकते है इस वाक्य में
  जैसे : who is playing? (कौन खेल रहा है)= सुमित (sumit)
  what is playing? (क्या खेल रहा है ?) = football
  यहाँ sumit and football दोनों noun है।
- जिन वाक्यों के अंत: में नीचे दिये गये word जुड़े होंगे वो noun होंगे जैसे :
  Ment = mangement ,agreement
  tion = station , vacation , foundation

th = growth
er = teacher
or = doctor
ty = honesty
ry = bravery
ce = advice
ledge = knowledge
dom = fredom ,wisdom
ics = physics
ship = friendship
sion = pension

(1) PROPER NOUN

Proper noun से हमारा तात्पर्य किसी विशेष (specific) व्यक्ति, वस्तु तथा स्थान के नाम से होता है।
जैसे: Mohan, Jaipur, Radha etc.
(a) **Mohan** is my friend.
(b) I live in **Delhi**.
(c) we are planning to go to **Pizza Hut**.
(d) There are many important documents at **The Library of congress**.

उपर दिए गये **ex (a)** में mohan एक boy का proper name दिया हुआ है ex (b) में delhi एक proper city का name है ex (c) pizza hut एक proper restaurant का name दिया है और ex (d) में **The Library of congress** एक library का proper name है इसलिए mohan ,delhi ,pizza hut, **The Library of congress** यहाँ proper noun हैं ।

(2) COMMON NOUN

जिस Noun (संज्ञा) से एक वर्ग अथवा जाति के व्यक्ति या वस्तु के नाम का बोध हो, उसे Common Noun(जातिवाचक संज्ञा) कहते हैं। जैसे- boy, girl, Village ,city etc.
(a) According to the **Girl**, the nearest town is very far.
(b) The **Girls** are going to the nearest village.
जैसा की हम ऊपर दिए गये examples में देख सकते हैं यहाँ हम किसी विशेष girl की बात नहीं कर रहे हैं अगर कोई विशेष girl की बात की गयी होती तो यहाँ उस girl का girl की जगह proper name दिया होता जैसे – sita , priya आदि , यहाँ girls जाति की बात हो रही है जो कोई भी girls हो सकती है इसलिए यहाँ 'girl' common noun है ।
नीच दी गयी table से आप common noun और proper noun को और अच्छे से समझ सकते है -

Common Noun	Proper Noun
boy	Ram
girl	rita
bridge	mahatma gandhi bridge
city	kanpur
book	war and peace
tower	eifel tower
jeans	levis

(3) COLLECTIVE NOUN

collective noun एक ही प्रकार के लोगों , जानवरों , वस्तुओं आदि के समूह (group) के नाम होते हैं ।
A collective noun is a name used for a group of people ,animals and things etc.
examples :- Team, Committee, Army etc **Other Example of Collective Noun :-**
A **Pride** of Lions
A **Flock** of birds
A **herd** of cattle
A **class** of student

सामान्यत: Collective Noun का प्रयोग Singular में होता है। इनका प्रयोग Plural में तभी किया जाता है जब मतभेद दर्शाया जाए या फिर प्रत्येक सदस्य के बारे में कुछ कहा जाए।
(a) The **jury** is deciding the matter.
(b) The **flock** of geese spends most of its time in the pasture
(c) The **team** are divided over the issue of captainship.
यहाँ टीम एक लोगों के group का नाम है जो divide (अलग) हो गया है या group के प्रत्येक सदस्य की राय (opinion)अलग-अलग है इसलिए इस वाक्य में team' plural होगा ।
(d) The **audience** have taken their seats.
यहाँ audience में प्रत्येक सदस्य (individual) की बात हो रही है इसलिए यहाँ 'audience'plural है ।

(4) MATERIAL NOUN

Material noun ऐसी वस्तुओं के नाम को कहते हैं जो metal और substance (प्रदार्थ) हो और उनसे दूसरी वस्तुयें बनाई जा सकती हो ।
जैसे: Gold, Silver, Zink, wood etc.
(a) The necklace is made of **gold**.
(b) He got his furniture made of teak **wood**.
Material Nouns, Countable नहीं होते हैं अर्थात् इनकी गिनती नहीं की जा सकती है। इन्हें मापा या तौला जा सकता है। इनके साथ सामान्यत: Singular verb का प्रयोग किया जाता है एवं इनके पहले Article का प्रयोग नहीं किया जाता है।

(5) ABSTRACT NOUN

Abstract Noun, ऐसे गुण, भाव, क्रिया एवं अवस्था को व्यक्त करता है जिन्हें छूआ नहीं जा सकता है, देखा नहीं जा सकता है, बल्कि केवल महसूस किया जा सकता है।

जैसे :- poverty , bravery , hatred , laughter , poverty , youth , Honesty .

Abstract Noun का प्रयोग सामान्यतः Singular में किया जाता है।

जैसे :- (a) People respect his sincerity.

(b) Honesty is the best policy.

Noun को Countable एवं Uncountable में भी बाँटा जा सकता है।

(6) COUNTABLE NOUNS

Countable Noun वह Noun होता है, जिसकी गणना की जा सके। Countable noun singular और plural दोनों हो सकते हैं ।

जैसे: (a) We bought six tables.

(b) I have a few friends.

(c) She saw many movies last month.

(7) NON-COUNTABLE NOUNS

Uncountable Noun वह Noun होता है, जिसकी गणना न की जा सके।

जैसे: (a) J. Priestly discovered oxygen.

(b) They decided to sell the furniture.

(c) Much money was wasted on the show.

Countable Noun: Stars, Seconds, Rupees etc.

Uncountable Noun: Money, time,knowledge etc.

IMPORTANT RULE:-

RULE 1

कुछ Nouns का प्रयोग हमेशा Plural form में ही होता है। इन Nouns के अन्त में लगे s को हटाकर, इन्हें Singular नहीं बनाया जा सकता है। ये दिखने में भी Plural लगते हैं, एवं इनका प्रयोग भी Plural की तरह होता है।

ऐसे Nouns निम्न हैं: Annals, Ashes, Scissors, tongs, pliers, pincers, bellows , trousers, pants, pajamas, shorts, gallows, fangs, spectacles, goggles, binoculars , eyeglasses, Alms , amends , archives, Earnings, arrears, auspices, congratulations, embers, fireworks, lodgings, outskirts, particulars, proceeds, regards, riches,remains, savings, shambles, surroundings, tidings, troops, tactics, thanks, valuables, wages, belongings etc.

(a) His earning are small.

(b) Riches have wings.

(c) The proceeds were deposited in the bank.

(d) All his valuables were stolen away.

(e) Alms are given to the beggars.

(f) The proceeds were deposited in the courts.

RULE 2

कुछ Nouns दिखने में Plural लगते हैं लेकिन अर्थ में Singular होते है। इनका प्रयोग हमेशा Singular की तरहा होता है जैसे :-

branches of learning : physics , mathematics , economics , Politics etc.

Titles of Books : Three musketeers , Five Point someone etc.

Diseases:- mumps , Measles , Rickets etc.

Descritive names of countries:- The United States , United Arab Emirates etc. उपर दिये गये examples में सभी noun के साथ s/es लगा है लेकिन इसका मतलब ये नहीं है की ये plural form में है ये सभी singular हैं क्योंकि ये सभी single body को दिखाते हैं ।

some other example :

News, Innings, Summons, Economics, Ethics, Mumps, Measles, Rickets, Shingles, Billiards, Athletics etc.

Some confusing Singular and Plural form of nouns:-

कुछ nouns ऐसे होते है जिनके अंत में s या es जोड़ देने से उनका मतलब (meaning) पूरी तरह से change हो जाता है जैसे :-

Singular Noun	s/es Form
Water (पानी)	Waters (sea)
Wood (लकड़ी)	woods (जंगल)
cloth (कपडे)	clothes (ड्रेस)
air (हवा)	Airs (दिखावटी)
fruit (फल)	Fruits (परिणाम)
custom (आदत)	customs (Tax)
Sand (बालू)	Sands (रेगिस्तान)
Abuse (दुरुपयोग)	Abuses (कुरीतियाँ)
Advice (सलाह)	Advices (सूचनाएँ)
Compass (सीमा)	compass (एक यंत्र)
Number (संख्या)	numbers (मात्राएँ)
Physic (दवा)	physics (भोतिकी)
Quarter (चोथाई भाग)	Quarters (छोटे मकान)
Return (वापस)	Returns (हिसाब,आय)

A collective noun is a **singular** noun and is followed by a singular verb **if it is used as a single body or group**.
The **jury is** still out. Or, the **jury was** unanimous in its decision.
The **family is** living together now.
2. A **collective nouns** is used as a **plural noun** and is followed by a plural verb **if they are used as individuals**.
The **jury were** divided in their opinions.
The **family were** living in different places.

NOUN-GENDER

Gender को चार भागों में विभाजित किया गया है:
(1) Masculine Gender (पुल्लिंग):- ऐसे Noun जो male sex को व्यक्त करते हैं, Masculine Gender कहलाते है जैसे : Tiger, Power, Violence, Father, Sun, Summer, Time, Thunder etc.

(2) Feminine Gender (स्त्रीलिंग):- ऐसे Noun जो Female sex को व्यक्त करते हैं, Feminine Gender कहलाते हैं जैसे Tigress, Woman, Lioness, Mother, Sister, Peace, Nature, Earth, Goddess etc.

(3) Common Gender (उभयलिंग):- ऐसे Noun जो स्त्री एवं पुरुष दोनों के लिए प्रयुक्त होते हैं, Common Gender कहलाते है जैसे Child, Baby, Teacher, Servant, Student, Cousin, Infant, Thief, Neighbour etc.

(4) Neuter Gender (नपुंसक लिंग):- ऐसे Noun जो उन निर्जीव वस्तुओं को व्यक्त करते हैं जो न male हैं और न female Neuter Gender कहलाते है Copy, Book, Room, Paper, T.V., Box, etc.

Changing masculine noun to feminine noun :-
RULE 1
कुछ cases में Masculine noun के बाद 'ess' लगाने से feminine noun बनाया जा सकता है।
जैसे:

Masculine	**feminine**
Author(लेखक)	Authoress
Host(मेजबान)	Hostess
Jew	Jewess
Mayor	Mayoress
Poet (कवि)	Poetess
Tutor	Tutoress
Heir	Heiress

RULE 2-
कुछ cases में Masculine Noun के अन्तिम vowel एवं उसके पहले आने वाले consonant को हटाकर 'ess' जोड़ने से भी Feminine noun बन जाता है।
जैसे:

Masculine	**feminine**
Actor	Actress
Benefactor	Benefactoress
Hunter	Hunteress
Prince	Princess
Waiter	Waitere
Tiger	Tigeress

RULE 3
कुछ cases में Masculine Noun के शब्दों में कुछ change किया जाता है एवं अन्त में 'ess' लगाने पर Feminine Noun बन जाता है।

Masculine	**Feminine**
Emperor	Empress
God	Goddess
Duke	Duchess
Master	Mistress

RULE 4
में cases Compound Masculine Noun के first अथवा second शब्द में कुछ परिवर्तन किये जाता है। जैसे:

Masculine	**Feminine**
Man-servant	Maid servant
Washerman	Washerwoman
Buck-rabbit	Doe-Rabbit
Brother-in-law	Sister-in-law
Bull-calf	Cow-calf
Milkman	Milkmaid
Peacock	Peahen
Landlord	Landlady

Noun number (singular – plural):-

Number: If a Noun tells about one or more than one is called Number (अगर noun हमें ये बताता है की वो एक है या एक से अधिक है तो उसे number कहा जाता है)
ये दो प्रकार के होते है -

(a) Singular Number: If a Noun tells about only one , is called Singular Number. (अगर noun केवल एक के बारे में बता रहा हैं तो वह एकवचन संख्या (singular number) कहलाता है जैसे – boy , girl , pen etc.

(b) Plural Number: If a noun tells about more than one it is called Plural Number.(अगर noun एक से अधिक होने की जानकारी दे रहा हो तो वह

He said that Gandhiji started the Quit India movement.

6. Will / shall का परिवर्तन would / should में होता है पर will/ shall का परिवर्तन 'should' में होगा अगर वाक्य सलाह सम्बन्धित हो ।

1. He said, "I shall come tomorrow."
He said that he would come the next day.

2. She said to me, "What shall I do after the exam?"
She asked me what she should do after the exam.

7. वाक्य के अर्थ को देखते हुए कई बार modals में परिवर्तन किए जाते हैं।

1. She said, "If I get selected, I need not take any exam further."
She said that if she got selected, she would not have to take any exam further.

2. He said, "Need I send an e-mail?'
He asked me if he had to send an e-mail.

3. He said, "When I was a kid, I could not go out alone," (i 'could' के लिए हुआ है।)
He said that when he was a kid, he was not allowed to go out alone.

Chapter - 10

Preposition

preposition मतलब pre + position

pre का अर्थ पहले (before) होता है, जबकि position का अर्थ स्थान (place) होता है। अतः preposition एक ऐसा word है, जो noun or pronoun के पहले प्रयुक्त होकर noun or pronoun का संबंध sentences के अन्य शब्दों से दिखलाता है।

A preposition is a word used before a noun or pronoun to show its relation with the other words of the sentence.

Example:-

1. The book is **on** the table.

2. The pen is **in** the inkpot

3. The cat is **under** the table.

उपयुक्त शब्दों में on, in, under, का प्रयोग क्रमश the table, the inkpot, the table के पहले प्रयुक्त हुआ जो वाक्य के अन्य शब्दों -the book, the pen, the cat से सबंध बताता है अतः on, in, under, prepositions हैं ।

Correct Use of Prepositions:-

(A) Use of 'At':-

Rule (1):-At का प्रयोग छोटे स्थानों के नाम (name of smaller places) के पहले 'में ' के अर्थ में होता है। जैसे-

My brother lives at Jajuar. (गांव)
I live at Musallahpur hat. (मुहल्ला)

Rule (2) :- At का प्रयोग नीचे दिये गए शब्दों के बाद 'लक्ष्य' के अर्थ को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-

Shout at	grumble at	shoot at
laugh at	mock at	bite at
look at	kick at	aim at
smile at	growl at	

Rule (3):- At का प्रयोग समय को अभिव्यक्त करने के लिए 'पर' के अर्थ में होता है। जैसे-

He will reach at 5 a.m.
He came at 6 O' clock

Rule (4) :-At का प्रयोग नीचे दिये गए शब्दों के पहले होता है। जैसे-

At the station	At page 50
At a concert	At school
At the airport	At a match
At the bottom	At college
At the theatre	At home
At a lecture	At a concert
At à conference	At the top
At the bus stop	At the bridge
At the bus stop	At university
At the platform	

Rule (5) : 'At' का प्रयोग समय सूचक शब्दों के पहले होता है।

At night   At noon   At daw
At dusk   At midnight   At afternoo
At daybreak   At twilight

Rule (6) : At का प्रयोग निम्नलिखित शब्दों के पहले होता है। जैसे-

At this moment   At bed time
At this hour   At Christmas
At Easter

Rule (7) : At का प्रयोग कीमत/दर/चाल की दर को अभिव्यक्त करने वाले शब्दों के पहले होता है। जैसे-

Milk sells at Rs. 22/- a litre. (दर -rate)
He got that book at Rs. 50. (कीमत-price)
The motorcycle is running at eighty kilometres an hour. (चाल की दर-speed)

Rule (8) : At का प्रयोग temporary action (अस्थायी कार्य) को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-

He is at work. अर्थ -He is working now.
She is at play. अर्थ—She is playing now.

Rule (9) : At का प्रयोग उम्र (age) तथा चरण (stage) को अभिव्यक्त करने वाले शब्दों के पहले होता है। जैसे-

My grandfather died at the age of sixty.
I left college at twenty five.

(B) Use of 'In' :-

Rule (1) : In का प्रयोग बड़े स्थानों (bigger places) जैसे—देश, शहर, राज्य, महादेश,महानगर आदि के नामों के पहले होता है। जैसे-

We live in India. (देश)
India is in Asia. (महादेश)
She lived in Uttar Pradesh (राज्य)
Mr. Thakur lives in Patna (शहर)
My father-in-law lives in Mumbai. (महानगर)

Rule (2) : In का प्रयोग निम्नलिखित phrases में होता है। जैसे-

In the night
In the evening
In the morning
In the afternoon

ध्यान दें : In the night or at night के प्रयोग में फर्क होता है ।

Note : In the night का प्रयोग 'किसी निश्चित रात' के अर्थ में होता । जबकि at night का प्रयोग 'किसी रात' के अर्थ में होता है।

Rule (3) : In का प्रयोग निम्नलिखित शब्दों के पहले 'में या के अंदर' के अर्थ में होता है। जैसे-

In the world	In a newspaper
In a queue	In a city
In the sky	In a street
In a village	In the house
In a letter	In the room
In a town	In hospital
In the bus	In prison
In church	In the rain

इन वाक्यों को देखें:

We live in the world.
In the bag
He is in the room.

Rule (4) :In का प्रयोग permanent action (स्थायी कार्य) को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-

His brother is in the Army. He is in the Navy
I am in the education.
He is in the politics.

Rule (5) : In का प्रयोग period of time expressing words (अवधि/समय सूचक शब्दों) के पहले होता है। जैसे-

महीनों के नाम के पहले :-

In a week   In January
In this week   In February

ऋतुओं के नाम के पहले :-

In this month   In this season
In summer   In spring
In winter   In autumn

सालों का नाम के पहले :-

In 1999   In the year of 1942
In 2001   In the year of 1993

शताब्दियों के नाम से पहले :-

In 1947 In this century
In the eighteenth century
In the sixteenth century

उम्र के नाम के पहले :-

In the Victorian age
In the Elizabethan age

Rule (6) : In का प्रयोग A/An + car / taxi / jeep के पहले होता है | example -
He goes to college in a car. (√)
She went to school in a jeep. (√)
Her lover goes to the office in a taxi. (√)

Rule (7) : In का प्रयोग possessive adjectives + car/taxi/jeep के पहले होता है। जैसे -
He is sitting **in** his car.

(C) Use of 'Into' :-

Rule (1) : Into का प्रयोग motion, inside, anything- (किसी चीज के भीतर की ओर गति) के भाव को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-
The frog fell **into** the well.
Rule (2) : Into का प्रयोग एक माध्यम से दूसरे माध्यम में या एक अवस्था से दूसरे अवस्था में परिवर्तन के लिए होता है। जैसे-
Translate **into** English.
Milk turns **into** curd.
Rule (3) : Into का प्रयोग 'का/के/की के' अर्थ में भी होता है। **जैसे-**
The police inspector enquired into the case.
पुलिस इन्सपेक्टर ने मुकदमे की जाँच की।
That old man has insight into man's character.
बूढ़े व्यक्ति को मनुष्य के चरित्र का ज्ञान है।
Rule (4) : Into का प्रयोग verbs के बाद होने पर उसका अर्थ परिवर्तित हो जाता है। **जैसे-**
Break into = जबरदस्ती प्रवेश करना
Do into = अनुवाद करना
Eat into = नष्ट करना
Let into = अनुमति देना
Look into = जाँच करना
See into = विचार करना
Turn into = अनुवाद करना. बदलना

(D) Use of 'On' :-
Rule (1):On का प्रयोग 'स्थान स्पर्श के भाव को अभिव्यक्त करने के लिए 'घर' के अर्थ में होता है। **जैसे-**
There are two books **on** the table.

Rule (2): On का प्रयोग 'को'/'पर' के अर्थ में time expressing words (समय को सूचित करने वाले शब्दों) के पहले होता है। निश्चितता के भाव का बोध होने पर इसका प्रयोग होता है।
जैसे :-
On Tuesday On Monday evening
On the morning On the event
On the evening On the Ist January
On Monday On the same night
अग्रलिखित समय सूचक शब्दों के पहले in का प्रयोग नहीं होता है ! **जैसे -**
In Monday
In Tuesday
In Monday evening
In the following evening
In the morning of the event
In the same night
In the evening of the Ist January.

Rule (3): On का प्रयोग A/An/the + bus/train/aeroplane/ ship के पहले होता है। **जैसे-**
He was on a bus/ a train/a plane/ a ship.
Rule (4): On का प्रयोग A/An + cycle/ scooter/motorcycle के पहले होता है। **जैसे-**
He was on a cycle / a scooter / a motorcycle.
Rule (5) : On का प्रयोग Possessive Adjectives + cycle/ scooter/motorcycle के पहले होता है। **जैसे-**
He goes to school on his cycle/ scooter/motorcycle.
Rule (6): On Tom foot, a horse, horse's back, a camel, a camel's back, an elephant, elephant's back, a buffalo, buffalo's back के पहले होता है। जैसे-
He walks on foot.
He was riding on a horse.
Rule (7) : On का प्रयोग 'की ओर' के अर्थ में Direction (दिशा) का बोध कराने के लिए होता है। जैसे-
The robber drew a dagger on him.
Rule (8) : On का प्रयोग निम्नलिखित शब्दों के पहले होता है। **जैसे-**

- on television
- on a diet
- on demand
- on a cold day on holiday
- on 15th March
- on the radio on business on duty
- on the phone on a tour
- on loan
- on the telephone on a trip
- on page 50
- on strike
- on the wall
- on leave
- on a journey on guard

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Chapter – 11

Antonyms / synonyms

No.	Word	Meaning	Synonyms
1.	Genuine	Truly what something is said to be (वास्तविक)	Real, True, Actual, Honest, Sincere, Veritable, Authentic, Original
2.	Laconic	Brief (संक्षिप्त)	Crisp, Brusque, Pithy, Terse, Compendious, Concise, Succinct
3.	Diligent	Having or showing care and conscientiousness in one's work or duties (मेहनती)	Industrious, Careful, Assiduous, Tireless, Attentive, Indefatigable
4.	Insolent	Showing a rude and arrogant lack of respect (बदतमीज)	Impudent, Rude, Impertinent, Disrespectful, Brazen, Bold
5.	Sordid	Involving immoral or dishonourable actions and motives / Arousing moral distaste and contempt (घिनौना)	Unpleasant, Low, Mean, Dirty Foul, Squalid, Base, filthy
6.	Transient	Lasting only for a short time / Impermanent (अस्थायी)	Transitory, Temporary, Ephemeral, Passing, Brief, Momentary
7.	Abandon	Cease to support or look after (someone) / desert (छोड़ देना)	Forsake, Leave, Quit, Desert, Relinquish, Renounce, Surrender
8.	Accede	Agree to a demand, request, or treaty (मान लेना)	Consent, Join, Agree, Adhere, Assent, Accept
9.	Adversity	A difficult or unpleasant situation (विपत्ति)	Misery, Misfortune, Hardship, Distress, Affliction, Disaster
10.	Affluent	Having a great deal of money / wealthy (धनी)	Prosperous, Wealthy, Rich, Moneyed, Opulent, Loaded
11.	Candid	Truthful and straightforward (निष्कपट)	Frank, Honest, Open, Direct, Outspoken, Sincere
12.	Cantankerous	Bad tempered,argumentative and uncooperative (झगड़ालू)	Quarrelsome, Bellicose, Crabby, Cranky, Crotchery, Testy
13.	Coarse	Rough or Harsh in texture (खुर्दरा)	Rough, Rude, Crude, Gross, Vulgar, Unrefined, Uncouth
14.	Condemn	Express complete disapproval of / Censure (निंदा करना)	Criticize, Castigate, Censure, Chide, Punish, Sentence
15.	Convict	Person found guilty (दोषी ठहराना)	Culprit, Captive, Felon, Prisoner, Repeater
16.	Defer	Put off (an action or event) to a later	Postpone, Delay, Put off, Suspend, Shelve,

		time (टालना)	Adjourn
17.	Deliberate	Done consciously and intentionally (जानबूझ के किया हुआ)	Intentional, Ponder, Consider, Premeditated, Reflect
18.	Eminent	Famous and respected within a particular spare (of a person) (प्रख्यात)	Renowned, Famous, Prominent, Distinguished, Superior, Illustrious, Celebrated, Notable
19.	Enigmatic	Puzzling (रहस्यपूर्ण)	Puzzling, Mysterious, Cryptic, Obscure, Perplexing, Baffling
20.	Eternal	Lasting or existing forever / Without end (सार्वकालिक)	Ageless, abiding, Continual, Enduring, Everlasting, Indestructible, Timeless
21.	Feign	Pretend to be affected by (a feeling, state, or injury) (बहाना करना)	Pretend, Fake, Simulate, Dissemble, Sham, Counterfeit
22.	Hoodwink	Deceive or trick (छलना)	Deceive, Trick, Fool, Cheat, Mislead, Bamboozle
23.	Hurdle	A problem or difficulty that must be overcome (बाधा)	Barrier, Hindrance, Obstruction, Impediment, Vault
24.	Impeccable	In accordance with the highest standards (त्रुटिहीन / अवगुणरहीत)	Faultless, Perfect, Flawless, Spotless, Immaculate, Blameless
25.	Intrepid	Fearless / Adventurous (निडर)	Gallant, Courageous, Fearless, Heroic, Plucky Spunky
26.	Jubilant	Feeling or expressing great happiness and triumph (प्रफुल्लित)	Rejoicing, Joyful, Happy, Elated, Exultant, Pleased, Glad
27.	Lethal	Sufficient to cause death (जानलेवा)	Fatal, Deadly, Mortal, Malignant, Toxic, Poisonous
28.	Meticulous	Showing great attention to detail / Very careful and precise (अतिसावधान)	Careful, Scrupulous, Particular, Punctillious, Precise, Accurate, Fastidious
29.	Nefarious	Wicked or criminal (बदमाश)	Wicked, Villainous, Atrocious, Vile, Evil, Sinful, Vicious
30.	Obscene	Offensive or disgusting by accepted standards of morality and decency (अश्लील)	Indecent, Dirty, Lewd, Filthy, Smutty, Gross, Vulgar
31.	Prudent	Acting with or showing care and thought for the future (विवेकी)	Wise, Careful, Coutious, Judicious, Sensible, Discreet, Frugal
32.	Rectify	Put right / Correct (सुधारना)	Correct, Remedy, Redress, Repair, Improve, Adjust
33.	Scorn	A feeling and expression of contempt or disdain for someone or something	Condemn, Disdain, Contempt Despise, Ridicule,

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp https://wa.link/9h4q2x 1 web.- https://shorturl.at/qClJ5

FREE SAMPLE

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

whatsapp https://wa.link/9h4q2x 2 web.- https://shorturl.at/qClJS

Our Selected Students

Approx. 563+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
	Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others......

Click on the below link to purchase notes

WhatsApp करें - https://wa.link/9h4q2x

Online Order करें - https://shorturl.at/qClJS

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO